मूल्य रु. ५-००

मासिक

श्री स्वामिनारायण

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महीने की ११ तारीख • वर्ष - ११ • अंक : १२७ • नवम्बर-२०१७

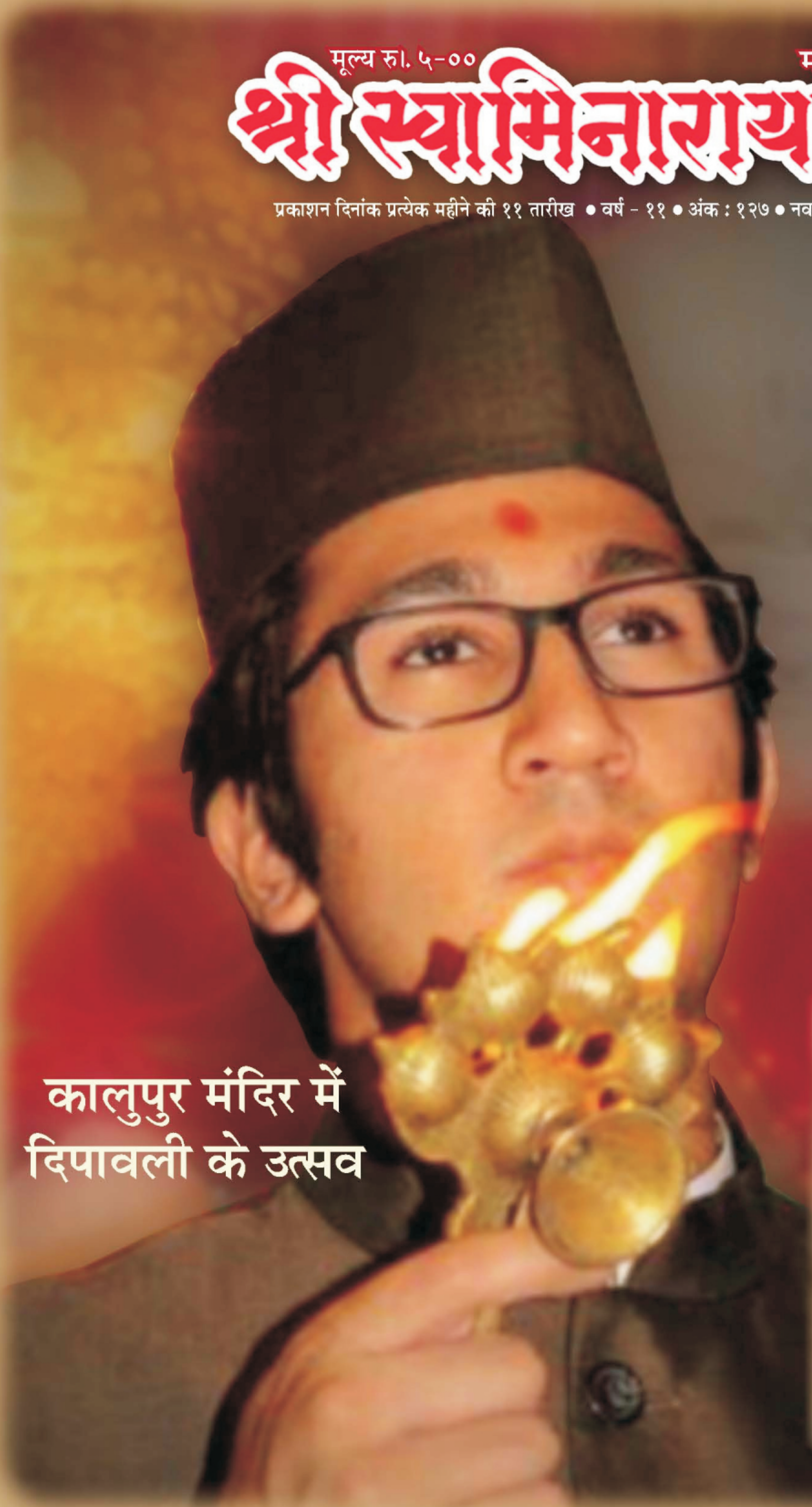

कालुपुर मंदिर में दिपावली के उत्सव

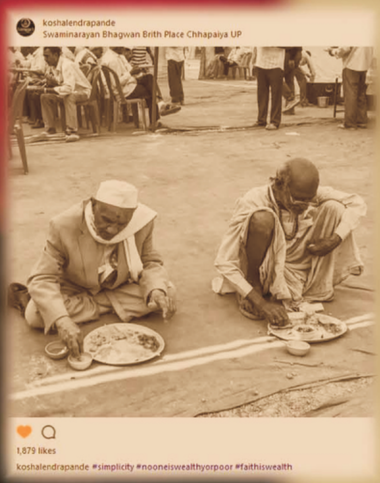

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद-१

(१) प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के ४५ वे जन्मोत्सव के अवसर पर आयोजीत कालुपुर से जेतलपुर की पदयात्रा में संतो हरिभक्तो के साथ और जेतलपुर मंदिर में आयोजीत विशाल सभा में प.पू. बड़े महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री के साथ केक काट रहे प.पू. आचार्य महाराजश्री । (२) कालुपुर मंदिर में दिपावली के दिन समूह चोपडा पूजन करते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री । (३) कालुपुर मंदिर में नूतन वर्ष के अन्नकूट दर्शन और श्री नरनारायणदेव की अन्नकूट आरती उतारते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री ।

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - ११ ● अंक : १२७

नवम्बर-२०१७

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स :
२७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com

दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स : ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info

पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०५
०३.	छपैया का पूर्व इतीहास	०६
०४.	विक्मशी खाचर	०९
०५.	प.पू. आचार्य महाराजश्री के मुख से शुभाशिर्वाद	१०
०६.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	१३
०७.	सत्संग बालवाटिका	१५
०८.	भक्ति सुधा	१७
०९.	सत्संग समाचार	२०

अस्मदीयम्

आप सभीने दिपावली ऐवं नूतनवर्ष अपने परिवार के साथ देव दर्शन करके मनाया. चातुर्मासभी अब खत्म होने जा रहे हैं और इस समयमें आपने कितना प्रभु स्मरण, भजन, किर्तन और कथा वार्ता इत्यादि किया उसके बारे में एक अंदाजा निकाले । जैसे साल खत्म होने के बाद आप सभी अपने व्यापार में कितना पैसा कमाया और कितना खर्च किया और आखिर में कितना पैसा बचाया एसा आपने अंदाजा निकाला होगा । श्रीहरिका भक्त कभीभी नुकसानका व्यापार नहीं करता और यह बात जो हरि भक्त शिक्षापत्रीकी आज्ञाका पालन करता है उसके लिऐ बिलकुल सही है । हम जो भी धन अर्जित करते हैं वह सभी श्रीहरिने ही दिया हुआ है और यह बात हमें कभी नहीं भूलनी चाहिऐ ।

अब शिशिरकी खुशनुमा ऋतुका प्रारंभ हो रहा है । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी निश्रामें हमारे मंदिर के पाटोत्सव-कथा पारायण, शाकोत्सव और कलोल पंचवटी मंदिरके प्रतिष्ठा उत्सव इत्यादीकी परंपरा शुरु होगी । १६ दिसम्बर से पवित्र धनुर्मासकी धून भी प्रारंभ होगी । इसिलिये हम सभी हरिभक्तो के लिए चातुर्मास पूर्ण होते ही सबकुछ पूर्ण हो गया एसा नहीं है क्योंकी हमारे लिये तो नित्य चातुर्मास ही है । हमें हमारे जिवन में एसी आदत डालनी हैं की हम भगवान श्री स्वामिनारायणका अखंड भजन एवं भक्ति करते रहे और जीवन के विविध क्षेत्रो में सबकुछ काम करते हुए भी हम अपने इष्टदेव को सदा याद करते रहे जिससे हमारा यह आखरी जन्म सफल हो जाए ।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

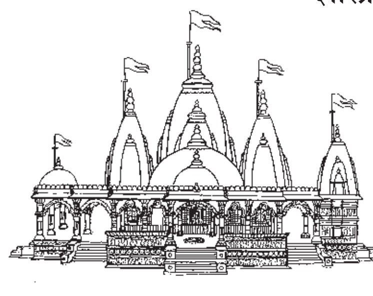

श्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की

रुपरेखा

(अक्टुबर-२०१७)

७ श्री स्वामिनारायण मंदिर बावला के पाटोत्सव अवसर पर पदार्पण ।

८ श्री स्वामिनारायण म्युझियम नारणपुरामें युवा सत्संग शिबिर अपनी शुभ निश्रा में संपन्न हुइ ।

१० श्री स्वामिनारायण मंदिर , वसइ (डाभला) के शताब्दि महोत्सव के अवसर पर पदार्पण ।

१३से १७ श्री स्वामिनारायण मंदिर लंदन विल्सडनलेन और हेरो में पदार्पण ।

१९ दिपावलीके दिन श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुरमें समुह शारदा पूजन-चोपडा पूजन अपने वरद हस्तों से संपन्न हुआ ।

२० नूतन वर्ष के पावन दिन श्री नरनारायणदेव की श्रुंगार आरतीके दर्शन करने के बाद अपनी बैठक में सभी भक्तो को दर्शन एवं आशीर्वाद दिये ।

२२ श्री स्वामिनारायण मंदिर देउसणा में पदार्पण ।

२५ श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरियामें बालस्वरुप श्री कष्टभंजनदेव के पाटोत्सवके अवसर पर पदार्पण ।

२९ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुरमें संत महादिक्षा अपने वरद हस्तों से संपन्न हुइ ।

प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा (अक्टुबर-२०१७)

७ श्री स्वामिनारायण मंदिर वसइ (डाभला) में शताब्दि पाटोत्सवके अवसर पर पदार्पण ।

८ श्री स्वामिनारायण म्युझियम नारणपुरामें सत्संग युवा शिबिर अपनी अध्यक्षता में संपन्न हुइ ।

१८ काली चौदशके पावन दिन श्री सहजानंद गुरुकुल असारवामें प्रसादीके श्री हनुमानजी महाराजकी आरती के बाद कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिरमें श्री हनुमानजीका पूजन, अर्चन और आरती अपने वरद् हस्तो से किये ।

२० नूतन वर्ष के पावन दिन श्री नरनारायणदेव की अन्नकूट आरती अपने वरद हस्तो से की ।

२५ श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरियामें बालस्वरुप श्री कष्टभंजनदेव के पाटोत्सवके अवसर पर पदार्पण ।

२९ श्री स्वामिनारायण मंदिर वेडा में विजय स्थंभ की पूजा के अवसर पर पदार्पण ।

छपैया का पूर्व इतीहास

- साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

अपने इष्टदेव भगवान श्री स्वामिनारायण, पिता धर्मदेव एवं माता भक्तिदेवी के कारण हमारे छपैयापुरने मनुष्यआकृति का रुप लीया । इस पावन छपैयापुरका महत्व अनादि युग से पौराणिक शास्त्रो में लीखा है । अक्षरधाम के अधिपति परब्रह्म पुरुषोत्तम परमात्माने छपैयापुर की भूमि का अपने दिव्य अवतरण के लीए चयन कीया उसके भी कइं कारण हैं जीनमे से कुछ यहां निम्नलिखीत है।

त्रेतायुगमें मार्कण्डमुनि नाम के एक संत थे जिनके अपने आश्रम एवं अपनी यज्ञशाला थी । उन्होंने कई सहस्त्र वर्षोतक जमीन के भीतर एक गुफा में उग्र तपश्चर्या की थी ।मुनि की कठीन तपश्चर्या का भंग करने का प्रयत्न स्वर्ग के देव एवं अप्सराओंने कीया लेकीन मुनिश्री चलित नहीं हुए । अतः सहस्त्र वर्षो की कठीन तपश्चर्या के पश्चात परमात्माने मार्कंडमुनि को प्रसन्न होकर दिव्य दर्शन दिये जिस में परमात्मा बाल मुकुन्द स्वरुप में अपने दोनो हस्तकमलसे दायिने चरणकमल का अंगूष्ठ मूंह में लीए शयन मुद्रा में थे । ऐसे दिव्य स्वरुप के दर्शन से कृतार्थ मुनीजीने बाल मुकुन्द भगवान की स्तुति की । ''करार चिंदेनपदारविंदम्, मुखारविंदेविनिवेषयन्तम वटस्य पत्रस्य पुरे शयानम् बालमुकुंद मनशा स्मरामी'' परमात्मा के दिव्य दर्शन से अति प्रसन्न होकर मुनिजीने इस भव्य एवं दिव्य बालस्वरुप का दर्शन समस्त विश्व के प्राणिमात्र हो सके एसा वरदान परमात्मा से मांग लीया और परमात्माने भी तथास्तु कहकर मुनिजी को अनुग्रहित कीया । इसके साथ ही मार्कण्ड मुनि आठवें चिरंजीवी के रुप से समग्र विश्व में प्रसिद्ध हुए जो आज भी छपैया की पावन भूमि पर दिव्य स्वरुप में तपश्चर्या कर रहे है । मार्कण्ड मुनिने ही सरयुपारी के कुलगुरु के रुप में श्री घनश्याम महाराज की नामकरण संस्कारविधि एवं चौलसंस्कारविधि, कर्णवेध आदि संस्कार की पूजा में उपस्थित थे ।

जिस जगह पर धर्मदेव का घर था और जहाँ पर

अनंतकोटी ब्रह्मांड के अधिपति प्रगट हुए उसी घर के नीचे गुफा में बेठकर मार्कण्ड मुनिने देव और दानवों की इर्ष्या से छूपकर तपश्चर्या की थी इसीलिए यह जगह ''छुपिया' नाम से प्रचलित होने लगी। एक कालान्तर के बाद यह जगह 'छपिया' नाम से प्रचलित हो गई। गुजराती भाषामें अपभृंश होकर 'छपैया' के नाम से भी इसको जाना जाता है। भारत सरकार के अधिकृत रिकार्ड की मुताबित इस जगह के रेल्वे स्टेशन का नाम 'स्वामिनारायण छपिया' है जीसका बोर्ड आज भी रेल्वे स्टेशन पर लगा हुआ है।

एसा प्रतित होता है की परम कृपालु परमात्माने मार्कण्ड मुनीजी को दिये हुए आशिर्वाद को साकार करने हेतु ही यह ''छपिया'' जगह का चयन कीया है।

छपिया की भूमि भगवान श्री घनश्याम महाराज के चरणारविंद से पावन हुई ईसलिए उसका पौराणिक महत्व और भी अधिक बढ गया।

छपियापुर में स्थित 'नारायण सरोवर' का भी आदिकाल से बहुत महत्व हैं। प्राचिन काल में मार्कण्ड मुनिजी अपने आश्रममें सहस्त्राधिक गौमाता को आश्रय देकर उनका लालन-पालन करते थे। कुछ समय बाद एक बड़े अकाल के समय बहुत सारे मनुष्य एवं गाय इत्यादी पशु मरने लगे। उस समय परमात्मा के चरण अंगूष्ठ से गंगाजी वहाँ पर प्रगट हुए और उस नवनिर्मित सरोवर को मुनिजीने 'नारायण सरोवर' ऐसा नाम दिया। गंगाजी के प्रागट्य के बाद उस पावन स्थान के आसपास अनेक ऋषी-मुनिओने अपने स्थानक बनाये और इस तरह नारायण सरोवर में अडसढ तीर्थस्थान का वास हुआ। भगवान श्री घनश्याम महाराज नारायण सरोवर में नित्य स्नान करते थे। छपियापुर में भक्तिदेवीने मनुष्याकृति का रुप लीया। भक्तिमाता के पितामह (दादाजी) बालकराम तिवारी और दादीमा जीवरानी देवी थे जो पूर्वजन्ममें ऋषि कश्यप और अदिति थे।

बालकराम तिवारी 'लोनापार' गाँव में रहते ते। एकदिन इस दम्पतिने निवृत्ति धर्म स्विकार कर अपना शेष जीवन सरयू के तट पर स्थित अवधपूरिमें व्यतित करने लगे। उनके दो पुत्र थे - कृष्ण शर्मा और दुन्द शर्मा। अपने दोनो पुत्र के विवाह संपन्न करने के पश्चात एवं सांसारिक उत्तरदायित्व से मुक्त होकर अपने गाँव लोनापार से निकलकर कुछ दिन बाद वे अवधपुरी के नजदीक स्थीत छपियापुर के नारायण सरोवर के तिर पर जा रुके ओर वहाँ रात्रिनिवास किया। इश्वर के नाम का अखंड स्मरण करते करते दोनों को अपने पूर्वजन्म की स्मृति हुई और दिव्य दृष्टि एवं त्रिकाल ज्ञानकी स्फुरणा से उनको अनेक शुभ संकेत प्राप्त हुए और दिव्य अनुभूति भी हुई। इसीलिए दोनोंने अपनी यात्रा को रोक दिया और नारायण सरोवर के तिर पर ही पर्णकुटिर बनाकर भक्तिमय एवं जप-तप-भजन युक्त जीवन जीने लगे।

एक दिन प्रातः संध्या के समय यह दम्पति भगवान श्री नरनारायण का नामस्मरण जप कर रहे थे। उसी समय साक्षात् चर्तुभुज भगवानने दिव्य दर्शन दिये। उस समय जीवरानी देवीने परमात्मा से अपनी मुक्ति का वरदान माँग लीया। भगवान श्री नरनारायण ने कहा ''हे देवी ! इस सरोवर में हिमारे चरण अंगूष्ठ से गंगाजी प्रकट हुए हैं और हम वह पत्रशायी बालमुकुंद स्वरुप में मार्कण्ड मुनि के आश्रममें अखंड रहते हैं। आप अन्य स्थान पर न जाये। हम स्वयं ही आपके पुत्र की पुत्री के उदर से मनुष्यरुप में प्रगट होंगे।'' इतना कहकर भगवान अंतर्ध्यान हो गये। इस दिव्य घटना के बाद बालकराम तिवारी छपिया को अपना चीरकाल तक स्थान बनाकर वहाँ रहने लगे और अपने दोनो पुत्रो को सहपरिवार 'लोनवार' गाँव से बुलाकर छपियापुर में निवास सुनिश्चित किया। बालकराम ओर जीवरानी नारायण सरोवर के तट पर तपश्चर्यायुक्त शेष जीवन व्यतित करने लगे। उनके स्मृति स्थान इस सरोवर के तट पर आज भी मोजूद है जहाँ आकर लोग अपनी अनेक मनोकामना पूर्ति हेतु व्रत शुरु करते हैं या संपन्न करते हैं।

कुछ समय बाद विक्रम संवत १७९८ कार्तिक पूर्णिमा के पावन दिन बालकराम के पुत्र कृष्ण शर्मा और पुत्रवधु भवानीदेवी के घर स्वयं भक्तिदेवी प्रकट हुए। भक्तिदेवी का प्राकट्य, बाल्यकाल, धर्मदेव के साथ उनका विवाह ओर अनंतकोटी ब्रह्मांड के अधिपति का

प्रादुर्भाव यह सारी बातों का बड़े विस्तार से वर्णन संतोने हमारे संप्रदाय के ग्रंथो में किया है। इसी तरह धर्मदेव दादा की प्रागट्य भूमि 'इटार पांडे' गाँव का इतिहास भी बहुत ही रोचक और सुंदर है जीसके बार में हमारे अगले अंक में लीखा जायेगा।

छपियाधाम सभी सत्संगी के लिए सर्वश्रेष्ठ ओर सर्वोत्तम है। श्रीहरिने अपने दिव्य प्रागट्य हेतु जीस स्थान का चयन कीया उस पावन छपियाधाम का पूराना रोचक इतिहास जानने के बाद जो व्यक्ति संप्रदाय का आश्रित नहि हे वो भी छपिया के दर्शन के लीए मोहित हो जाय और उसके हृदय में भक्ति प्रगट हो जाय। छपियापुर के पौराणिक प्रसंग हमारे अनेक पुराणो में लिखे हैं। और सरयूपारि विद्वानो के पास ऐसे कहीं प्रमाण लिखे हुए हैं उनमें से यह प्रसंग यहाँ पर लिखा है। ओर बहुत सारी रोचक इतिहास कथाए इस पुण्यभुमि के साथ जुडी हुइ हैं। कर्मक्षेत्र गुजरात और जन्मक्षेत्र उत्तर कौशलदेश सरयूपार। तभी सबके मनमें यह प्रश्न अवश्य उपस्थित हुआ होगा की परमात्माने इतनी दूर के स्थानका चयन क्युं कीया। पर इतिहास के प्रसंग को जब हम जानेंगे यह सारे विचार और प्रश्न अपने आप ही शांत हो जायेंगे।

छपियापुर में बालस्वरुप श्री घनश्याम महाराजने अनेकविध लीलाएं की और अनगिनत जीव का मोक्ष कल्याण किया। उसके प्रतिक स्मृति-स्थान के दिव्य दर्शन लोग आज भी करते हैं और अपने जीवनको कृतार्थ मानते हैं।

उसमें भी जीस घर में भगवान प्रगट हुए और ग्यारह साल तक रहकर अपने माता-पिता और सरयूपारि भक्तों के मनोरथ पूर्ण किये उस भगवान श्री घनश्याम महाराज की प्रागट्यभूमि स्थान का महिमा तो सविशेष और अनन्त हैं। हम बड़े भाग्यशाली है कि इस पवित्र जन्मस्थान मंदिर का हमें दिव्य दर्शन होता हैं।

'छपिया' मंदिर परिसर में प्रवेश करते ही सर्वप्रथम जिस मंदिर का हम दर्शन करते है उसका निर्माण आदि आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराजने १७५ वर्ष पूर्व करवाया था और स्वयं ही मातापिता के साथ बालस्वरुप श्रीघनश्याम महाराजकी पंचधातुकी मूर्ति (प्रतिमा) की प्राण प्रतिष्ठा विधि संपन्न की थी। मंदिर की पश्चिम दिशा की ओर भगवान श्री घनश्याम महाराज की प्रागट्यभूमि का जन्मस्थान मंदिर है। जहाँ पहले धर्मदादा का घर था। उस घर को प्रसादिरुप मूल स्वरुप में रखा गया है। उस घर का सर्वप्रथम जीर्णोद्धार संवत १८६८ में हुआ। उसके बाद प.पू. श्री वासुदेवप्रसादजी महाराजने इस जन्मस्थान में चैत्र वद दशम संवत १९७२ के दिन बाल स्वरुप श्रीघनश्याम महाराज की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा विधी संपन्न की। उसके सौ वर्ष पश्चात जन्म स्थान का जीर्णोध्धार अति आवश्यक बन गया था। अत: वर्तमान आचार्य महाराजश्री प.पू.ध.धु. १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीने प्रसादी का घर एवं मूर्ति को यथावत रखतते हुए समग्र जन्मस्थान मंदिर को आरस का बनाने की आज्ञा वर्तमान महंत ब्रह्मचारी स्वामी वासुदेवानंदजी गुरु गवैया रामकृष्णानंदजी को दी।

अत: केवल आठ वर्ष के समय के भीतर ही चार मंजिलवाला भव्य और नूतन जन्म स्थान मंदिर 'भुवन' के आकार में तैयार हो गया है। अम्बाजी का आरस पत्थर का इसमें उपयोग कीया गया है। और इसकी लम्बाई १७५ फीट, चौडाई ९० फीट और उँचाई ७१ फीट हैं। प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से दिनांक ३१-१०-२०१७ से ४-११-२०१७ कार्तिक सुद-१५ देवदिपावली तक पंचदिनात्मक उदघाटन महोत्सव बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया जायेगा।

आप जब भी छपियाधाम के लीए आये उसका ऐतीहासीक महत्व याद करेंगे तो सविशेष आनंद प्राप्त होगा। सात कल्प जीतना दिर्घायु और आंठ्वे चिरंजीवी महात्मा मार्कण्ड मुनिकी पावन तपोभूमि में भगवान बालमुकुंद प्रगट हुए और उसी दिव्य स्थान में भगवान श्री स्वामिनारायण ने मनुष्यरुप में जन्म लिया। आज भी यह जन्म स्थान मंदिर में बालस्वरुप भगवान घनश्याम प्रभु प्रगट स्वरुप में विराजमान है और यहाँ पर आनेवाले सभी तीर्थयात्रीओं के मनोरथ-संकल्प परिपूर्ण करते है एसी बहुत ही चमत्कारीक दिव्य घटनाए देखने को मिलती है।

विकमशी खाचर

- चन्द्रकांत मोहनलाल पाठक (गांधीनगर)

कारियाणी गाँव के वस्ता खाचर के दरबारमें श्रीजी महाराज विराजमान थे । श्रीहरिने अपने पास बैठे सभी संत-हरिभक्तो से यह बात की ।

''पूर्वजन्म में अपने माता-पिता हो । जो निर्धन परिस्थिति में हो और भीक्षा माँगकर अपना जीवन-निर्वाह करते हो और बिल्कुल अपने पास ही रहते हो तो भी हमें इसका पता न चले क्युंकी हमें अपने पूर्वजन्म की विस्मृति हो गई है ।''

श्रीहरि की यह बात सुनकर सभामें उपस्थित विकमशी खाचर खड़े हुए और अपने पूर्वजन्म के बारे में महाराज से पूछताछ की । महाराजने उसको उत्तर देते हुए कहा ।

''आप पूर्वजन्म में खंभात में एक सुथार थे । हिराभाई नाम के गृहस्थ के पुत्र थे और आपका नाम 'नारण' था । अभी आपके पिताजी नहीं है । आपका भी छोटी उम्र में ही स्वर्गवास हो गया और आपकी माता पुंजीबा अभी भी जीवित है । वे अपने पुत्र वियोग फुट-फुट कर रोने से अन्ध हो गये हैं । आपकी एक हवेली थी जो अभी एक शेठ के पास गीरो खत से रखी हुई है । यह शेठने आपकी माता को रहने की व्यवस्था की हैं और बचा हुआ भोजन खाने को देता हैं ।''

विकमशीने अपनी पूर्वजन्मकी माता से मिलने की इच्छा व्यक्त करते हुए उनसे मिलने की अनुमति महाराजसे से मांगी । और महाराज से अपनी माताकी और जानकारी मांगी । श्रीहरिने कहा :

''उस हवेली के शेठकानाम तो पता नहिं लेकिन उस हवेली में दाखिल होते ही एक लकडी के खंभे के भीतर पांचसो रुपये आपके पिताजीने रखकर उस खंभे को बंद कर दिया है । आप ध्यान से देखेंगे तो आपको पता चल जायेगा ।''

इस जानकारी के साथ विकमशी खाचर खंभात गये और वहाँ लोगों को हवेली वाले शेठ के बारे में पूछताछ की लेकीन किसी को उस शेठके बारे में कुछ भी पता नहीं था । बहुत कोशिश के बाद भी जब उस शेठ का कुछ पतानहीं चला तब विकमशीने अपनी माता पुंजीबा की पुछताछ शुरु की । एक व्यापारी का पुंजीबा की जानकारी थी और उसने हवेलीवाले शेठ को पता बताया । विकमशी तुरन्त ही हवेलीवाले शेठ को मीला और उनसे कहा ।

''मैं भगवान स्वामिनारायण का आश्रित हूँ और मेरे गुरुने मुझे मेरे पूर्वजन्म के बारे में कुछ जानकारी दी है । उस विषय में ज्यादा जानकारी लेने हेतु में यहाँ आया हूँ ।''

हवेलीवाले शेठने विकमशी को बातचीत के दौरान यह बात बताई की पुंजीबा अभी भी जीवित है लेकिन छोटी उम्र में ही उसके पुत्र नारण का अवसान हो गया इसीलिए वो अन्ध हो चूकी है । उनकी हवेली यहाँ गीरवे पर रखी हुई है और वो पुंजीबा अपना शेष जीवन यहाँ व्यतित कर रही है । उनका खाने-पीने का उन्तजाम यहाँ से होता है ।

विकमशी खाचर पुंजीबाको मिलने गया । जब पुंजीबाने पुछा की वो कौन है तब विकमशीने कहा की वो उसका पुत्र नारण है जो मृत्यु के बाद विकमशी खाचर के नाम से काठीयावाड के कारियाणी गाँव में उसका जन्म हुआ है । पुंजीबाने भी पीछली सारी बाते सुनकर उसको सही कहा । विकमशी खाचरने शेठजी को बुलाकर लकडे के खंभे को खोलने को कहा । खंभे को खोलते ही उसमें से पांचसो रुपये नीकले जो शेठजी को देकर विकमशी खाचरने अपनी मां की देखभाल ठीक तरह से करने को कहा और जरुरत होने पर उसको कारियाणी से बुला लेने को कहा । शेठने भी विकमशी खाचर की पूर्वजन्म की मा की ठीक तरह से देखभाल करने का वचन दिया । और विकमशी खाचर पूंजीबा की अनुमति लेकर कारियाणी वापस आये ।

प.पू. आचार्य महाराजश्री के मुख से शुभाशिर्वाद

- संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (बापूनगर)

श्रीहरि के ७ वें वंशज श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति अपने ४५ वें जन्मोत्सव के अवसर पर ३०-९-२०१७ के विजया दशमी के शुभ दिन कालुपुर मंदिर में श्री नरनारायणदेव के दर्शन करने के पश्चात संत-हरिभक्तो के साथ केवल ढाई घंटे में २० से २२ कि.मी. की दूरी पार करके जेतलपुर श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज के दर्शन करने के बाद धर्मकुल के साथ विशाल सभा में विराजमान हुए । उनकी आज्ञासे में श्री लाली राजाने प.पू. मोटा महाराजश्री के साथ अमेरिका स्थित 'देवस्य' प्रोजेक्ट की सूचना-पत्रिका का विमोचन कीया । विडीयो कैसेट के द्वारा बड़ी स्क्रीन पर प्रोजेक्ट के मुख्य अंश दिखाये गये ।

इसी संदर्भमें प.पू.श्री आचार्य महाराजश्रीने आशीर्वचन देते हुए कहा की यह विडीयो केसेट लंदन के हरिभक्तोने अपने खर्चसे अमेरिका पहूंचकर तैयार की है जीनके नाम के उच्चारण के साथ प.पू. मोटा महारजश्री के द्वारा उनका सन्मान हुआ था । 'देवस्य' जीस तरह का प्रोजेक्ट है इसके केवल ५% प्रतिशत ही इस ओडीयो कैसेट द्वारा उसको न्याय मिला है । बहुत सारे लोगो ने डिजनीलेन्ड देखा होगा या उसका नाम सुना होगा । उससे ४ गुना बडा हमारा यह प्रोजेक्ट हैं ।५२५ एकड जमीन पर फैले हुए इस प्रोजेक्ट में करीब एक (१) या देढ (१.५) माइल जीतना बडा हमारा तालाब हैं । श्रीहरिने जीन बरतनों का उपयोग कीया था और इस प्रसादी के बरतनों से ही प.पू. श्री देवेन्द्रप्रसादजी महाराजने जो भगवान की एक मूर्ति बनवाई थी वहीं मूर्ति का वहाँ पर स्थापन करना है । (हरिभरी वनराजी, रंगीन फुलोवाला उपवन, स्वच्छ पानी से भरे हुए सुंदर नदी एवं तालाब खैलने के लीए में दान, खाने-पीने की चीजें परोंसती अद्यतन रेस्टोरन्ट ओर विवाह आदी सामाजीक प्रसंग के लीए अद्यतन सुविधायुक्त मंडप - यह सब एक जगह पर होने से यह जगह हम इस पृथ्वी पर स्वर्ग जैसी लगती हैं । लेकिन यह उपमा भी इस स्थान के लीए कम हैं क्युंकी यहाँ पर केन्द्र स्थान पर भगवान की मूर्ति हैं ।) संप्रदाय की मर्यादा और सिद्धांतो को ऐसे ही बरकरार रखा गया है ।

आज दशकोशी हो या दंढाव्य देश हो । हम सब देख रहे हैं की उनके घर बंध हो रहे हैं और वे सब लोग ओस्ट्रेलिया, अमेरिका, केनेडा जैसे दूर के देशो में जाकर वहाँ पर बस रहे हैं । अब उनको हमें भगवान और सत्संग देना पडेगा । इसीलिए 'देवस्य' जैसे प्रोजेक्ट से भारतीय संस्कृति को पश्चिम के देशोमें ले जाने का एक प्रयास हैं । देवस्य अमेरिका में है इसीलिए उसकी प्रशंसा हो रही है ऐसा नहीं हैं । वहाँ जाकर क्या परिस्थिती हे वो देखे तो पता चलेगा । १८-१८ घंटे तक दो पारी में व्यक्ति काम करता है तब उसका वहाँ पर अपना घर चल सता हैं । बात सिर्फ इतनी ही है की जीनको सचमुच में भगवान चाहिए उनको भगवान से वंचित नहीं रखना है । एक ओर बात भी है । बहुत लोगो को ऐसा लगता है की हम कुछ नहीं कर रहे । लेकीन हकीकतमें हमे बहुत कुछ कर रहे हैं । या तो एसा पूछे की हम क्या नहीं कर रहे । शायद दूसरो की तुलना हमारे पास जो है वह कम लगे लेकिन हमारे पास हमारे भगवान है । श्रीनरनारायणदेव है । जन्मभूमि छपैया भी हमारे पास है । आज हम सबने श्री नरनारायणदेव के दर्शन के बाद पैदल चलकर यहाँ पर श्री रेवती बलदेवजी के दर्शन कीये । तो हमें चले हैं वही सच्चा रास्ता है ।

एक हरिभक्त लंदन से आये थे और मुझे कहा की यहाँ १८ दिन तक रुकना है और कैलास मानसरोवर, केदारनाथ, बद्रीनाथ इत्यादी तीर्थस्थान पर जाना है । जब वे वापिस आये तो मिले तो नहीं पर टेलिफोन कीया तो फिर हमने उनसे पूछा तो उन्होंने दोनो हाथ जोडकर बताया की जब वे दूसरी बार यहाँ आयेंगे तो श्री नरनारायणदेव के सीवा और कीसी स्थान पर नहीं जाना है । यह सबका अनुभव है और यही सच भी है ।

कीसी माला में मानरुपी दोष होता है और कीसी माला पहनाने के पीछे पैसे लेने की चाहत होती है। आज हमें हमारे पिताजी प.पू. श्री मोटा महाराजश्रीने माला पहनाई। आज का दिन तो क्या मेरा पूरा जीवन धन्य हो गया क्योंकी माता-पिता की खुशी से ज्यादा और क्या हो सकता है । (प.पू. श्री मोटा महाराजश्रीने अपने आशिर्वचन में माला का निर्देश करते हुए कहा की माला पहनाने की कोई परम्पार नहीं है। हमारे सम्बन्ध मित्र जैसे है । लेकीन शनीवार को हम हमारे पुराने निवास स्थान असारवा गुरुकुलमें हमारे दादाजी प.पू. अयोध्याप्रसादजी महाराज द्वारा प्रस्थापीत श्री हनुमानजी महाराज का दर्शन करने के बाद म्युजीयम और असारवा गये तब निर्गुण स्वामीने यह माला देते हुए हमें कहा की ''यह माला वाडी के मोगरा के पुष्प चूंटकर और श्री जनमंगल नामावली के पाठ करते हुए बनाई गई है जीसे आप प.पू. श्री आचार्य महाराजश्री को अर्पित करना।'' इसीलिए हम यह माला आज आचार्य महाराज को अर्पित की।)

हमारे जन्मदिन निमित्त भी कुछ अच्छा कार्य हो इस हेतु आज के दिन कालुपुर और जेतलपुर मंदिर में जो भी भेट आयेगी हम उसका उपयोग निःसहाय बच्चें की सुख-सुविधा और उनकी शिक्षा के लीए करेंगे । हमारे पास मानव शक्ति हैं। सेवा करने के लीए भक्तजन हैं। पैसा भी है । सबकुछ हैं। इसीलिए यह तय कीया है की यह पैसा कीसी ओर संस्था को देकर परोक्ष रुप से सेवा हो इससे बहेतर हैं की हम प्रत्यक्ष ही एसी सेवा करे । इस उमदा भावना से प्रेरित हो कर पीछले ४-५ दिनो में ही ४ - शयनकक्ष वाला एक बड़ा मकान खरीद लीया है। आपको पता हैं मंदिर की आसपास जमीन की क्या किंमत चल रही है? १ फुट का १ लाख रुपये। इस मकान का नाम परिवार में साथ बेठकर अनाथाश्रम नहिं लेकिन 'आंगन' रखा गया है। (आगन शब्द का उल्लेख प.पू.श्री मोटा महाराजने अपने आशीर्वचन में कीया ओर कहा की यह बहुत ही अच्छा नाम है क्युकी हम अनाथ नहीं है । हमारे नाथ तो श्री नरनारायणदेव हैं । लेकीन जो भी व्यक्ति इस आंगन में रहेगा वह सनाथ हो जागेया।) 'आंगन' का पुरा दायित्व गादीवाला, लाली राजा और उनके साथ नरनारायणदेव युवति मंडल संभालेंगे । पर आप एसा मत समझना की हमें कुछनहीं करना हैं क्योंकी इसमे आपके सहयोग की भी आवश्यकता रहेगी। भगवान केवल हमारे या संतो के या केवल भक्तों के नही है । भगवान तो हम सभी के है । इसलीए प्रत्येक कार्य के लीए हम सभी का दायित्व बनता हैं । आप सभी यह सब कर रहे हैं इसीलिए हम सबकी प्रगति है। हमने कभी आप से कुछ नहीं मांगा है और ना ही कुछ मांगेगे। आपका दीया हुआ आपके लीए ही उपयोग हो रहा है। हमारा प्रशासन बहुत ही पारदर्शी है। मैने पहले भी कहा है २०१४-२०१५ की साल में हमने कालुपुर मंदिर की ओर से करीब २६५ करोड रुपये नूतन मंदिर, मंदिर का जीर्णोध्धार, हरिभक्तो के लीए रहने की सुविधायें इत्यादी हेतु के लीए उस जगह पर खर्च कीया है जहां जमीन का दस्तावेज श्री नरनारायणदेव का है। हम बेंक में पूंजी जमा रखने के पक्ष में नहीं हैं। यहाँ से छपैया कई रास्ते से जा सकते हैं। उनमें से कोई अपने वाहन से जाये तो रास्ते में कोटा पहुंचते शाम हो जाती है । तो वहाँ पर कम से कम कुछ खाने को मिल जाय और विश्राम भी हो सके यह जरुरी है। लेकीन अगर मंदिर हमारे श्री नरनारायणदेव के दस्तावजे वाला नहीं है तो हम कुछ नहीं देंगे स्वीकार जरुर करेंगे।

विदेश से हम कुछ फंड यहाँ नहीं लाते हैं। एक वर्ष पूर्व हम जब लंदन उत्सव में गये तब कुछ हरिभक्तो की अनाथाश्रम के बच्चों को कुछ सहायता करने की भावना थी। उसी समय उन्होंने १,९०,००० पाउन्ड हमें दिये थे अब इस आंगन की योजनामें उसका उपयोग होगा। (लंडन के वे हरिभक्त उपस्थित थे जीनका यह अवसर पर सन्मान कीया गया)। पांच दिन पहले पी.पी. स्वामीने (जेतलपुर) हमे टेलिफोन कीया था और पुछा था की क्या आयोजन करना हैं? तब हमने कहा की कुछ नहीं करना है। हम पैदल चलकर आयेंगे और देवका दर्शन करेंगे। इस अवसर पर जो कुछ भी भेंट मीलेगी उसका आंगन प्रोजेक्ट के लीए उपयोग करेंगे। इस प्रोजेक्ट के लीए अगर पैसे कम पडेगें तो कहीं से भी ट्रस्ट के मंदिर से भी पैसा निकालकर चलायेंगे।

'आंगन' के लीये हमें कोई अलग ट्रस्ट नहीं बनाना हैं । द्विशताब्दी महोत्सव के समय जरुरियातमंदो के अन्नक्षेत्र चलाने हेतु 'नरनारायणदेव पब्लीक चेरीटेबल ट्रस्ट' का पंजीकरण हो चूका है । 'आंगन' को उसी ट्रस्ट के अंतर्गत लाना है । अनाथ बच्चों की शिक्षा के लीए भी हमारे पास सुविधाएं हैं । हमारे मंदिर द्वारा जो भी शाला-कोलेज चलते हैं उसकी की का दर दूसरी निजी संस्था के ऐसे दर से ४०% प्रतिशत कम हैं । और इतनी कम फी होते हुए भी बढीया शिक्षा दी जाती हैं । आजकल सरकार के द्वारा की-नियंत्रण की जब बाते चलती हैं तब बहुत ज्यादा कि-लेनेवाली संस्था के संचालक चिल्लाते हैं । हमारी शाला में शाला की रीक्षा, गाडी के चालक के बच्चे भी पढ़ते हैं और उसी शाला में लालजी महाराज और लालीराजा ने भी शिक्षा प्राप्त की हैं । आम जनता के मनमें यह भ्रमणा है की जीस शाला की फी ज्यादा हैं वहाँ अच्छी शिक्षा मिलती हैं । शाला में ए.सी. वर्गखंड का आग्रह रखा जाता है लेकीन क्या शाला से बाहर नीकलर बच्चे परिश्रम कर सकेंगे ? अपना शरीर तो परिश्रम से ही अच्छा रह सकता हैं ।

हमारी एक एसी संस्था हैं जो जरुरत से ज्यादा पैसे लेने से मना भी कर सकती हैं । जम्मु-कश्मीर के मुस्लिम निराश्रीतो को जब आश्रय की जरुरत थी, उनको उस समय दूध तो क्या पानी भी नहीं मिलता था, सुबह में दातून के बाद मुँह की सफाई के लीए पानी भी नहीं मिलता था तब हमारे मंदिर ने मानवता के धर्म का पालन करते हुए उन्हीं निराश्रीतो की सेवा की थी । उस समय हमनें सहायता निधि की एक राशी तय की थी । यह राशी का लक्ष्यांक पूर्ण होते ही मध्यरात्री के दो बजे उठकर अब ओर सहायता राशी को एकत्रीत ना करने की घोषणा की थी । दूसरे दिन कुछ लोगो सहायता देने के आग्रही थे उनको भी हमने मना कर दीया था । कुछ समय पहले ही कालुपुर मंदिर में घनश्याम महाराज के लीए सोने के सिंहासन के लीए हरिभक्त सोना देने के लीए तैयार थे । लेकीन हमने मना कर दीया और वह सिंहासन काष्ठ का बनवाया गया । भगवान मूल्यवान धातु से राजी होते हैं ऐसा नहीं है । आज हम सभी काष्ट के सिंहासन में दर्शन करते हैं तो एसा लगता है जैसे इतने वर्ष बाद श्री घनश्याम महाराज सांस ले रहे हैं । महाराजने सबसे पहले हमें मानवता शिखाई हैं । महाराज बडे दयालु थे इसीलिए संप्रदाय की स्थापना के समय उन्होंने वाव, कुएँ बनवाये थे, अन्नक्षेत्र शुरु कीये थे । वहां पर कोई कण्ठी देखने का नहीं मिलती थी । इसीलिए जब हम मानव बनकर मंदिर की सीढीयाँ चढेंगे तो भगवान बहुत ही प्रसन्न होंगे । और एसे ही सीढीया चडेंगे तो उसका पत्थर घीस जायेगा । बहुत बड़े भगत बनने के बाद मानव बनना कठीन हो जाता है ।

स्त्री सशक्तिकरण के विषय में बहुत कुछ लीखा जाता है, बोला भी जाता है लेकीन सही अर्थ में कुछ भी देखने का नहीं मिलता है । जब की हमारे सत्संग परिवार की बहनोने गादीवाला और लालीराजा के साथ कार्य करके दिखाया है । जो लोग वृद्धाश्रम चलाते हैं उनको धन्यवाद है, उनके खिलाफ कोई आपत्ति नहीं है लेकीन मैं व्यक्तिगत रुप से यह मानता हूँ की अगर हम कुछ राशि उनको देते हैं तो अप्रत्यक्ष रुप से हम वृध्धाश्रम को प्रोत्साहन दे रहे हैं । क्यूंकी वृद्धाश्रम का होना यह भारतीय संस्कृति के खिलाफ हैं । माता-पिता को बड़े आदर के साथ अपने घरमें ही रखने चाहिए ।

आज जो लोग पैदल चलकर आये हैं उन सबको धन्यवाद । जो लोग रोज पैदल चलते हैं उनको बहुत तकलीफ नहीं होती लेकीन जो लोग कभी पैदल नहीं चले है और आज पैदल चले है वे विशेष धन्यवाद के पात्र है । अभी तो बहुत सारे प्रोजेक्ट तैयार करने है और उन सभी की बात करेंगे तो शाम हो जायेगी इसीलिए विशेष कुछ नहीं बताना है । ये संत हमारी सेना है जो बहुत कार्य करते हैं, उनके साथ हम हसीमजाक करते हैं । हमारा यही परिवार है । आप सभी में से बहुत लोगो को हम जानते हैं । सबके साथ मिलकर कार्य करते रहे यही ईश्वर से प्रार्थना ।

प.पू. श्री लालजी महाराजने इस अवसर पर कहा की आप सभी की कितनी गहरी श्रध्धा और प्रेम महाराज के साथ जुडे होंगे तभी तो २०-२२ किलो मीटर चलकर यहाँ पर आते हैं । हम सभी को साथ मिलकर इससे भी ज्यादा प्रोजेक्ट करने हैं । हम सभी उसमें सहयोगी बने, महाराज हम सभी को क्षमता दे और विशेषरुप से महाराजश्री की कार्यक्षमता मुझमें भी आये आर पू. महाराजश्री को दिर्ध आयुष्य प्राप्त हो एसी श्री नरनारायणदेव के चरणों में प्रार्थना ।

श्री स्वामिनारायण म्युझियम

श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से

श्री स्वामिनारायण म्युजियममें लक्ष्मीपूजन एवं हनुमानजी का पूजन

धनतेरस की पावन दिन पर धनपूजन - लक्ष्मीपूजन पूरे विश्वमें अनेक स्थान पर किया गया होगा लेकीन हमारे अद्वितीय श्री स्वामिनारायण म्युजियम में इस धनतेरस के पावन दिन पर श्री लक्ष्मीपूजन इसीलीये अद्वितीय था की वह पूजन स्वयं श्रीहरि के वंशज के द्वारा किया गया था । प.पू. बड़े महाराजश्रीने सोने-चांदी के सिक्के के रुप में धन का पूजन म्युजियम के बड़े कक्ष में अनेक हरिभक्तो की उपस्थिती में कीया था । यह पूजन कीये गये सिक्के म्युजियम के साहित्य केन्द्र में प्रसादी के स्वरुप में सभी हरिभक्तो के लीये उपलब्ध थे जीसका लाभ सभी हरिभक्तो ले सके ।

धनतेरस के दूसरे दिन यानी की कालीचौदश के पावन दिन पर म्युजियम में स्थित प्रसादी के श्री हनुमानजी का समूर पूजन कीया गया था जीसका लाभ अनेक हरिभक्तोने बड़े उत्साह से लीया था और दिपावली की छुटीयो के दीन बड़ी संख्या में दर्शनार्थीओने म्युजियम की मुलाकात ली थी ।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम मे भेट देनेवालों की नामावलि-सितम्बर-१७

रु।. ११,०००/-	अ.नि. वालीबेन रणछोडभाई पटेल की पुण्यतिथि के अवसर पर - अहमदाबाद, ह. अमर परिवार के द्वारा ।
रु।. ९,१११/-	बाबुभाई मुलचंदभाई पटेल - घोडासर (प्रथम आमदनी मीलने के अवसर पर)
रु।. ५,५००/-	उर्मि विनयकुमार भट्ट - अहमदाबाद - अ.नि. मणीलाल लक्ष्मीदास भालजा साहेब के जन्म दिन के अवसर पर ।
रु।. ५,५००/-	धर्मप्रसाद मणीलाल शुकल - अहमदाबाद - अ.नि. मणीलाल लक्ष्मीदास भालजा साहेब के जन्म दिन के अवसर पर ।
रु।. ५,१५१/-	अ.नि. प.पू. भालजा साहेब (पू. बड़ेभाई) के ११५ वे जन्म दिन के अवसर पर भेट - ह. प्रबोधभाई आरीवाला, डॉ. निकुंज आरीवाला ।
रु।. ५,१००/-	जयसिंहजी - मथुरा ।
रु।. ५,०००/-	तनिष्काबेन धवलकुमार ठक्कर - विरमगाम ।
रु।. ५,०००/-	अ.नि. भुखणदास छोटालाल गांजावाला, ह. हर्षाबेन गांजावाला - अहमदाबाद
रु।. ५,०००/-	एक हरिभक्त - घाटलोडीया ।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम मे भेट देनेवालों की नामावलि-अक्टूबर-१७

रु।. ११,०००/-	गोमतीबेन अमृतभाई पटेल सह परिवार - वडु ।
रु।. ५,०००/-	मीनाबेन के. जोषी - बोपल ।
रु।. ५,०००/-	कांतिलाल प्रभुदास पटेल - वडुवाला - अभी राणीप ।

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये - श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला २० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है ।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव की मूर्ति के अभिषेक की नामावलि - सितम्बर-१७

ता. ०३-०९-२०१७	विभाबेन रणछोडभाई ईश्वरभाई पटेल – उनावा – गांधीनगर
ता. ०४-०९-२०१७	श्री स्वामिनारायण मंदिर – कोलोनीया – न्युझर्सी पाटोत्सव के अवसर पर।
ता. ११-०९-२०१७	अए.नि. मोहनभाई डाह्याभाई चौहाण – जामसरवाला – ह. गोरधनभाई और महेन्द्रभाई और अशोकभाई – हाल गांधीनगर
ता. १७-०९-२०१७	अ.नि. भालजा साहेब के मंडल के शाहदाबेन घनश्यामभाई आरीवाला, ह. डॉ. निकुंज आरीवाला और प्रबोधभाई छगनभाई आरीवाला।
ता. २०-०९-२०१७	श्री बंसीलाल हिंमतभाई बावडा – आर.टी.ओ. साबरमती।
ता. २२-०९-२०१७	अ.नि. सविताबेन सेंधाभाई पटेल – कुंडाल प्रथम वार्षिक पुण्यतिथी के अवसर पर, ह. अरविंदभाई और नवीनभाई और कीर्तन और पारुलबेन।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव की मूर्ति के अभिषेक की नामावलि - अक्टूबर-१७

ता. ०१-१०-२०१७	(सुबह) श्रीमनजी शीवजी हीराणी – यु.के. (दुपहर) अ.नि. वासुदेवभाई गीरधरभाई गज्जर – ह. आरतीबेन गज्जर – नारणपुरा
ता. ०२-१०-२०१७	पटेल नटवरलाल कांतिलाल – वडुवाला – कलोल।
ता. ०८-१०-२०१७	श्री रमेशभाई धनजीभाई पटेल – महादेवनगर।
ता. १०-१०-२०१७	श्री नरेन्द्रकुमार कांतिलाल पटेल – वडुवाला – अभी रानीप।
ता. १२-१०-२०१७	श्री नटवरलाल कांतिलाल पटेल – वडुवाला – कलोल।
ता. १४-१०-२०१७	(सुबह) श्री मनुभाई आर. पटेल – पालडी। (दुपहर) श्री प्रदीप नटवरलाल शाह – मणीनगर – अभी बोस्टन – ह. हेमलताबेन प्रदीपभाई शाह।
ता. १७-१०-२०१७	प.पू. बड़े महाराजश्री के वरद् हस्त से लक्ष्मीपूजन एवं श्री स्वामिनारायण म्युजियम में आयोजीत समूह महापूजा के यजमान अ.नि. जयदेवभाई ब्रह्मभट्ट – ह. भास्करभाई ब्रह्मभट्ट।
ता. १८-१०-२०१७	प्रसादी के हनुमानजी का समूह पूजन।
ता. २१-१०-२०१७	श्री सेंधाभाई केशवभाई पटले – गुलाबपुरा – शाहीबाग।
ता. २४-१०-२०१७	जीज्ञासा विरेन्द्रकुमार देसाई – फ्लोरीडा – ह. वाडीलाल पटेल – कुंडाल।

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. बड़े महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं।

संप्रदाय में एकमात्र व्यवस्था स्वामिनारायण म्युजियम में महापूजा। महाभिषेक लिखवाने के लिए संपर्क कीजिए।
म्युजियम मोबाईल : ९८७९५ ४९५९७, प.भ. परषोत्तमभाई (दासभाई) बापुनगर : ९९२५०४२६८६
www.swaminarayanmuseum.org/com • email:swaminarayanmuseum@gmail.com

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

सुगंध के बदले में सोना

(शास्त्री हरिप्रियदासजी, गांधीनगर)

श्रीजी महाराज की सुंदर सभा चल रही थी। उस सभा में अहमदाबाद से एक माली फुल की टोकरी लेकर आया। टोकरी में बहुत सारे सुगन्धीत फुल थे। फुल की टोकरी महाराज के सामने रख दी। महाराज ने टोकरी उठायी फुल को दिव्य स्पर्श किया और सभी संतो को टोकरी में से एक-एक फुल लेने को कहा। माली यह सुनकर सोचमे पड गया। टोकरी में तो थोडे ही फुल है और बहुत सारे संत है। लेकिन उसके आश्चर्य के बिच सभी संतोने एक-एक फुल लेने के बाद भी टोकरी में फुल थे। फिर महाराजने सभी भक्तजनो को एक-एक फुल लेने को कहा। उसके बाद भी टोकरी में फुल थे। फिर महाराज ने बहुत सारे फुल महिलाओं की सभा तक पहुँचाये। उसके बाद भी टोकरी तो फुलो से अभी भी भरी हुई थी।

मालीने सभा में महाराज को नतमस्तक होकर कहा, ''मैं तो यहाँ अपने स्वार्थ के लीए आया था। कुछ फुल बेचकर दो पैसे मिलेंगे। लेकिन आपने तो सब को फुल दिलवा दिये लेकिन मुझे तो एक भी पैसा नहीं मिला। मैं तो अपनी तकलीफ दूर हो इसीलिए यहाँ पर आया हूँ।''

श्रीजी महाराजने उस माली को फुलो की एक माला बनाने को कहा। मालीने एक बहुत ही सुन्दर माला बनायी और महाराज को अर्पण की। माला का स्विकार करते हुए स्वामिनारायण भगवानने अपने सोने के गहने निकाल दिये और माली को दे दिये। माली बहुत खुश हो गया। भगवानने आशीर्वाद देते हुए माली को कहा ''मेरा भजन करना। तुम सदैव सुखी रहोगे।''

परमात्मा जबभी कुछ देता है उससे हमारा जीवन सफल हो जाता है। जो जन्म भगवान की नित्य पूजा-अर्चा एवं भावपूर्ण भक्ति करता है वह सदैव सुखी रहता है। वो अपने स्वार्थ के कारण भी अगर सकाम भक्ति करता है तो भी भगवान उस पर प्रसन्न हो जाते हैं।

प्रिय सभी मित्र ! इस नूतन वर्ष में आपके जीवन में सदगुणरुप फुल की सुगंध महके और आपके भावपूर्ण भजन-भक्ति की माला भगवान स्वीकार कर सदैव आप पर प्रसन्न रहे ऐसी भगवान श्री स्वामिनारायण के चरणकमलमें प्रार्थना और बालवाटिका के सभी पाठको को सस्नेह नूतन वर्षाभिनंदन और जय स्वामिनारायण।

•

बोध कथा

- नारायण वी. जानी (गांधीनगर)

संस्कृत में एक बहुत ही सुंदर वाक्य हैं जीसमें ज्ञानी और विद्वान व्यक्ति का महत्व बताया गया है।

स्वगृहे पूज्यते मुर्ख, स्वग्रामे पुज्यते प्रभुः।
स्वदेशे पूज्यते राजा, विद्वान सर्वत्र पूज्यते ॥

श्लोक अर्थ : ''मुर्ख व्यक्ति अपने घरमें ही मान-सन्मान पाता है। गाँव का नेता अपने गाँव में ही मान-सन्मान पाता है। राज्य का राजा अपने राज्य में ही मान-सन्मान पाता है। लेकिन जो व्यक्ति ज्ञानी है, विद्वान हे वो हर जगह पर मान-सन्मान, यश, कीर्ती और प्रतिष्ठा पाता है।'' एक छोटी सी बोधकथा से हम ज्ञान और विद्वता का क्या महत्व है वो जानेंगे।

एक बनमें एक बड़ा आश्रम था। आश्रममें एक महाज्ञानी विद्वान और तपस्वी गुरु रहते थे। आश्रममें विद्याभ्यास बहुत अच्छी तरह से हो रहा था और बहुत सारे शिष्य गुरुनिश्रा में आश्रममें रहकर प्रभु भजन

करते करते विद्याभ्यास में रत रहते थे ।

एक दिन शाम को संध्याकाल समय पर विद्याभ्यास के बाद गुरुने अपने शिष्य को ग्रंथ देकर आश्रम के अन्दर रखने को कहा । शिष्य ग्रंथ लेकर आश्रम के भीतर गया लेकिन तुरन्त ही चिल्लाते हुए दौडकर बहार भाग आया । पूछने पर उसने बताया की अन्दर एक सर्प हैं।

गुरुने उस शिष्य को एक मंत्र दिया और कहा इस मंत्र के उच्चारण से सर्प चला जायेगा । शिष्य फिर आश्रम के भीतर गया और बड़ी श्रद्धा से मंत्र-उच्चारण कीया । थोडी देर बाद शिष्य बहार आया और अपने गुरु को बताया की सर्प वहीं पर है।

गुरुने अब शिष्य को हाथमें एक प्रज्वलीत दिप दिया और कहा इसको देखकर सर्प तुरन्त ही चला जायेगा । शिष्य के पीछे गुरु और अन्य सभी शिष्य भी आश्रम के भीतर गये । सभीने आश्चर्य से देखा तो वो सर्प नहीं एक बड़ी रस्सी थी । सभी शिष्य हंसने लगे । फिर गुरुने सभी शिष्योंको बताया : ''इस घटना से हम सभी को एक बहुत अच्छा बोध प्राप्त हुआ है । जीसको हम अन्धकार में सर्प मानते थे वह हकिकतमें एक रस्सी ही थी । प्रकाश से ही हम को सत्य प्राप्त हुआ ।

जीस तरह दिप हमको प्रकाश देता है उसी तरह सच्चा ज्ञान भी हमको प्रकाश देता है । इसीलिए जीवनमें हमें अगर सुख का रास्ता खोजना है और जीवन के रहस्य को समझना है तो हमें ज्ञानरुपी दिपक की आवश्यकता है । अगर व्यक्ति के पास ज्ञानस्वरुप दिपक नहीं है तो वह अन्धकार में भटकेगा और भय न होते हुए भी ज्ञान के अभाव में भयभीत होकर दुःखी होगा । जीवन में अज्ञान जैसा ओर कोई अन्धकार नहीं । इस अज्ञान-स्वरुप अन्धकार को ज्ञान-स्वरुप दिपक से ही हटाया जा सकता है । दूसरा ओर कोई रास्ता नहीं इसलिए ज्ञानी होना अति आवश्यक है।''

इस तरह सभी शिष्योंने अपने गुरु के मुख से ज्ञानरुपि दिपक का महत्व सुना और समझा । मित्रो ! आपको भी समझ में आ गया होगा की जीवनमें ज्ञान का क्या महत्व है और ज्ञान जीवनमें कीस तरह उपयोगी हैं । हम सभी बहुत ही भाग्यवान है क्योंकी हमारा जन्म एक सत्संगी परिवार में हुआ है जहाँ पर जीवन में उपयोगी एसा ज्ञान बड़ी सरलता से हमारे मंदिर के द्वारा मिल जाता है । दैवयोग से हमें सत्संग प्राप्त हुआ है तो नये वर्ष की शुरुआतमें ही सत्संग के द्वारा हम अपने जीवनमें ज्ञान-स्वरुप दिपक प्रज्वलित करें ऐसी इस नूतन वर्ष की शुभकामना के साथ सभी को नूतन वर्षाभिनंदन एवं जय स्वामिनारायण ।

श्री स्वामिनारायण मासिक में प्रसिद्ध करने के लिये लेख, समाचार एवं फोटोग्राफ्स ई-मेईल से भेजने के लिए नया एड्रेस

shreeswaminarayan9@gmail.com

श्री नरनारायणदेव के २४ कलाक दर्शन के लीये देखिये वेबसाईट

www.swaminarayan.info
www.swaminarayan.in

भारतीय समय अनुसार आरती दर्शन : मंगला आरती ५-३० ● शृंगार आरती ८-०५ ● राजभोग आरती १०-१० ● संध्या आरती १८-३० ● शयन आरती २०-३०

श्री स्वामिनारायण

भक्तिसुधा

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वचन में से)
एकादशी सत्संग सभा प्रसंग पर कालुपुर मंदिर हवेली "नूतन वर्ष में हम यह द्रढ संकल्प करे की हमे दुर्गुणो से रहीत होकर धर्मयुक्त जीवन जीये"
(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

आजकल विश्व में सबसे बड़ी कमी हैं तो वो हे समय की कमी । और ईर्ष्या ही हमारे समय को सबसे बड़ी हानी पहुंचाती हैं । ईर्ष्या ही हमारा सबसे बड़ा शत्रु है क्योंकी जब हमें किसी से ईर्ष्या होती हैं तो बहुत सारे व्यर्थ विचार हमे करते हैं और हमारा समय व्यय होता हैं जो हमें कभी वापीस नहीं मिलता । समय बहुत ही अमूल्य हैं । ाज कीसी के पासे समय नहीं हैं । अगर आज आप किसी को सबसे बड़ी चीज दे सकते हो तो वो हे आपका समय । कभी-कभी दस करोड रुपये से ज्यादा मूल्यवान दस मिनिट हैं । तो यह अमूल्य समय दूसरों की ईर्ष्या में व्यर्थ ही चला जाता हैं । इसीलिए यह महत्वकीबात हैं की हम अपना समय दूसरों के चहेरें पर मुस्कान आये उसमें बिताये ।

दूसरा है 'गर्व', 'अहंकार', 'अभिमान' । सुनने में तो यह तीी शब्द एक जैसे लगते हां लेकीन तीनों में फर्क हैं । मान लो की हम कीसी कार्य के लीये कार्य परिश्रम करते हैं और अच्छा होता हैं तो हमें गर्व की अनुभूति होती हैं । और अगर उस कार्य में हमे सफलता मिलती है तो हमें अभिमान आ जाता हैं । यहाँ तक तो ठीक हैं लेकिन जब यह अभिमान अहंकार में परिवर्तित हो जाता हैं तो तकलीफ हो जाती हैं । तो ये कैसे पता चलें की अभिमान अहंकार में परिवर्तित हो गया हैं ? तो जब हमारे मनमें यह भावना उत्पन्न हो जाय की हमें दूसरों को नीचे दिखाना हैं तब उसे अहंकार कहते हैं । जब एसा भाव हमारे मनमें उत्पन्न हो तब हमें सावधान हो जाना चाहिए । हमारा मन तो बड़ा चंचल हैं । हम जीसके लीए मना करेंगे वह काम हमारा मन सबसे पहले करेगा । क्योंकी हमारे मन को बन्धन तोडने का मन करता हैं । उसें उसे बे़ ही रोमांच का अनुभव होता हैं । की मैंने बन्धन तोड़ दीया । लेकिन समाज-सुधार के लीए कुछ सीमा तब बन्धन तोड़ना जरुरी है । जैसे की कुछ समय पहले लड़कीओं की शिक्षा नहीं दी जाती थी और उनका छोटी उम्र में ही विवाह करा दीया जाता था । हमारे समाज में लड़कीया पढे और नौकरी कर वह भी आवश्यक हैं । इसके लीए बन्धन तोडने चाहिए उसमें कोई आपत्ति नहीं । लेकिन मर्यादा को भी नहीं तोडना चाहिए । बन्धन और मर्यादा में ढाकर्क हैं । कैसे ? मर्यादा क्या है ? हम दूसरे व्यक्ति को उसकी सीमा तय करके उसको बताते हैं और इस सिमा के प्रतिक्रमण की अनुमति नहिं देते । तो यह सिमा हमारे लीए भी हैं । हम जो उम्मीद वे भी हमारी ओर से रखते हैं हमे 'मोह' या 'आसक्ती' नहीं रखने चाहिए, क्योंकी हमारे पास सीमित समय हैं । हम इस दुनिया में आये हैं तो कीसी व्यक्ति से मोह नहीं रखना हैं । भाई-बहन, पति-पत्नी, पिता-पुत्र, माता-पुत्री यह ऐसे सम्बन्ध हैं जीसमें कभी ना कभी अलग होना पडेगा । कुछ दिन तक दुःख होगा, और ्गर ममता और समबन्ध गहरे हैं तो ज्यादा दुःख होगा लेकीन कुछ दिन बाद हम सब कुछ भूल जायेंगे । हमें यह नहीं पता की इसे जन्म में जो हमारे सम्बन्धी या परिवार के सदस्य है वे पीछले जन्म में हमारे कौन थे । या फिर अगले जन्म में वे हमारे कैसे सम्बन्धी होंगे । इसीलिए प्रत्येक जगह हमें अपने कर्तव्य को पालन करना हैं लेकीन आसक्ति नहीं रखनी हैं ।

अगर यह संसार सागर को पार करने के लिए हमें सबकुछ अपने मन से छोडना पडेगा । अन्यथा एक एसा समय आयेगा की हमें बहुत ही पछतावा होगा । हमें सबकुछ सोच-समझकर सत्संग करना हैं और एक-एक करके सारे दुर्गुणो को छोडना हैं । महाराजने हमें इस सत्संग का दायित्व हमें दिया हैं तो हम और संत इसका निर्वहन कर रहे है । जो चीज हमारे मोक्ष की प्राप्ति में अवरोधक हैं उसको नही करना हैं । महाराजने कहा है की गुरु का वचन यदी हमें धर्मच्युत करते हैं तो हमें एसे वचन का पालन नहीं करना हैं । सबसे पहले हमें हमारी भीतरकी बुराईयों को हटाना है उसे दूर करना है । अर्थात अगर हमें से ही राह पर आगे बढ़ना है तो हर जगह प आसक्ति को तोडना पडेगा । तो नये सालमें हम यह संकल्प करे की हम मजबूत बने और यह प्रयत्न करे की हमारे दुर्गुण दूर हो ओर इश्वर और हमारे बीच यह संसार ना आये । जो हरिभक्त श्री नरनारायणदेव का नित्य दर्शन करता है उसको यह पता है और उसका यह अनुभव है की श्री नरनारायणदेव के मुखारविंद में प्रतिदिन अलग-अलग भाव के दर्शन होते हैं । भगवान और हमारे बीच जब यह संस्कार नहीं आता तब एसी अनुभूती होती है ।

•

दर्शन करनेकी आदर्श पध्धति

– सांख्ययोगी कोकिलाबा (सुरेन्द्रनगर)

भारतीय अध्यात्म परंपरामें मंदिर मे भगवानके दर्शनका एक अद्वितिय महत्व है । भगवानके दर्शन करने से अंतरमें दिव्य शांतीका अनुभव होता है और हमारे अनंत जन्म के पाप नष्ट हो जाते है और पुण्यका उदय होता है । भगवान श्री स्वामिनारायणने 'शिक्षापत्री' में सत्संगी मात्रको यह आज्ञा दी है की सभी सत्संगीको नित्य सायंकाल भगवानके मंदिरमें जाना है और उच्च स्वरमें किर्तन करना है और दर्शन करने है। भगवानने 'वचनामृत'में सुंदर मार्गदर्शन दिया है की परमेश्वरका दर्शन एकाग्र चित्त से करना और दर्शन करते समय अपने हृदयमें श्रध्धा रखनी है । दर्शन करते समय अपने मन एवं उसकी वृत्तिको कहीं ओर जगह पर नहीं जाने देना है। अगर हमारा मन किसी ओर जगह जा रहा है तो ऐसे दर्शनको लौकिक दर्शन कहते है । जिससे भगवान और संत प्रसन्न नहीं होते । एकाग्र मन के साथ श्रध्धायुक्त दर्शन करने से हमें दिव्य आनंद की अनुभूती होती है।

स्वामिनारायण भगवानने सारंगपुरके वचनामृत-२ में यह कहा है की जब भी हम परमेश्वरका दिव्य दर्शन करें हम अपने मन और द्रष्टिको एकाग्र रखे और इसके अलावा ओर किसी मनुष्य या पशु के प्रति हमें ध्यान नहीं देना है क्योंकि एसे दर्शन व्यर्थ दर्शन कहलाते है और एसे दर्शनसे परमेश्वर और बड़े संत कभी खुश नहीं होते । इस संदर्भ में सदगुरु निष्कुलानंद स्वामीने कहा है.......

जब कोइ नट गाँवके सभी लोगो के प्रत्यक्ष अपना खेल दिखा रहा होता है तब उसकी द्रष्टि अपने संतुलन पर ही स्थिर होती है । अगर वह नट किसी ओर जगह पर अपनी नजर रखता है तो उसका संतुलन बिगड जाता है और वह गिर जाता है और उसकी वजहसे उसका सारा खेल बिगड जाता है । उसी तरह मंदिरमें दर्शन करते समय हमारी द्रष्टि भगवानके सिवा कहीं ओर नहीं होनी चाहीऐ क्योंकि अगर हमारी द्रष्टि कहीं ओर जाती है तो उसका फल हमें नहीं मिलता । और अगर हमने एसे दर्शन किये तो हम चार या पांच दिनमें वह दर्शनको भूल जाते है । इस संदर्भमें महाराजश्रीने कहा है की भगवानकी मूर्तिका हमें बडे ध्यानसे देखकर दर्शन करना चाहिए और उसके सारे अंगोका मनन एवं निदिध्यास करना है तभी साक्षात्कार होगा ।

महारानी कुशलकुंवरबा बडे ध्यानसे और मन और हृदयमें अति प्रेमभाव से भगवानके नित्य दर्शन करते थे । वे धरमपुरमें रहते थे । एकदिन उन्होंने महाराजको धर्मपुर आनेका निमंत्रण दिया जिसका स्वीकार करते हुए महाराज संत एवं हरिभक्तोके साथ धरमपुर पधारे और अपने आत्यंतिक भक्त का भाव देखते महाराज वहां पर चार दिन तक रुके ।

श्रीजी महाराजका दर्शन करते हुए महारानी कुशलकुंवरबाके अंतरमें भगवानकी मूर्ति सदा के लिए बस गइ । जब भगवान धरमपुरसे आगे बढनेकी तैयारी कर रहे थे तभी कुशलकुंवरबाने भगवानसे एक प्रश्न पूछा की ''आपने अपने पत्रमें अनिर्देशसे लिखावंत ऐसा लिखा है तो यह अनिर्देश क्या है यह मुजे कृपया समजाये'' । भगवानने इसके उत्तरमें कहा की धरमपुर वह एक निर्देश है पर यह पृथ्वी जिस पर यह राज्य है वह अनिर्देश हे । उसी तरह यह पृथ्वी निर्देश हे पर जल अनिर्देश हे और जल निर्देश हे पर तेज अनिर्देश हे और तेज निर्देश हे और वायु अनिर्देश हे । उसी तरह वायुसे आकाश, महतत्त्व प्रधानपुरुष, प्रकृति पुरुष, महापुरुष, अक्षर यह सभी एक दुसरे से बडे हे और अनिर्देश हे । इसी तरह हमारा अक्षरधाम अनिर्देश हे और हम उसके निवासी हे। अगर कोइ हरिभक्त यह अनिर्देशको पहचान लेगा तो वह पक्का सत्संगी कहलायेगा ।

महाराजश्रीकी यह आर्षवाणीको सुनते हुए कुशलकुंवरबा अपने एकाग्र मन और बुद्धिसे भगवान श्री स्वामिनारायणके दिव्य दर्शन करते रहे और यह मूर्ति उसके अंतरमें समा गइ । अत: महाराजने वचनामृतमें सभी हरिभक्तोको कुशलकुंवरबाकी तरह दर्शन करनेको कहा है। यानी महाराजने कुशलकुंवरबाकी दर्शनकी पध्धतिको आदर्श पध्धतिका प्रमाणपत्र दिया है।

मंदिरमें भगवान मूर्तिमें प्रगट स्वरुपमें होते है और मूर्तिके द्वारा अपने भक्तो को आध्यात्मिक सुख देते है । अगर यह पूछा जाये की ऐसा कौनसा स्थान है जो मनुष्योको आध्यात्मिक सुखकी अनुभुती कराता है तो वह स्थान है मंदिर जो मनुष्यके हृदयमें भक्ति की ज्योती प्रगट करता है । जो भक्त भक्तिभावके साथ मूर्तिके सन्मुख खडे होकर दर्शन-पूजन एवं सेवा करता है तो उस पर भगवानकी कृपा होती है और उसे दिव्य अलौकिक सुखकी प्राप्ति और अनुभुति होती है।

इस संदर्भमें श्रीजी महाराजने गढडा प्रथम-६८ वचनामृतमें यह कहा है की, ''मेरी अष्ट प्रकारकी प्रतिमामूर्तिमें में अखंड निवास करता हुं'' मूर्तिमें सदा प्रगट रह कर भगवान अपने भक्तोके मनोरथ पूर्ण करते है इसी

लिऐ भगवानकी मूर्तिके दर्शन करते समय यह मूर्ति धातुकी है या पथ्थरकी एसा भाव हमें अपने मनमें नहीं लाना है लेकिन हमें एसा भाव रखना है की यह साक्षात भगवान ही है और इस तरहसे ठाकोरजीकी मूर्ति ही हमारे जीवनका केन्द्र बन जायेगा। मूर्तिके अंदर रह कर साक्षात भगवान हमारा खाल ग्रहण कर रहे है और अपने नेत्रके द्वारा हमें देख रहे है और अपने कानके द्वारा हमारी प्रार्थना सुन रहे है एसी भावना हमें अपने मनमें रखनी है।

अपने समयमें श्रीजी महाराज यह कहते थे की भगवान स्वामिनारायण निलकंठवर्णी के रुपमें जगन्नाथपुरी गये थे तब श्री जगन्नाथजीकी मूर्तिमें प्रवेश करके मंदिरके पूजारी के भक्तिभाव और छल कपट यह सब देखते थे। अतः मूर्तिमें रहकर भगवान हमको देखते है। हमारी प्रार्थना सुनते है और हमारी सेवाका स्वीकार करते है । इसीलिए मंदिरमें भगवानकी मूर्तिके दर्शन करते समय हमें मंदिरमें उपस्थित अन्य दर्शनार्थीओकी क्रियाओमें ध्यान नहीं देना है क्योंकि उससे भगवानके दर्शनमें हमारा मन स्थिर नहीं होता है। जो भगवानको बिलकुल पसंद नहीं है।

मंदिरमें भगवानकी मूर्ति के दर्शन करते समय भगवानने कैसे-कैसे वस्त्र अलंकार पहने है, कैसे हारमाला इत्यादी पहने है इसका बडे ध्यानसे और एकाग्र चित्तसे दर्शन करने से यह दर्शन हमारे हृदयमें स्थिर हो जाता है। इसी हेतु महाराजने मंदिरका निर्माण कराया है और अपने हाथोंसे मूर्तिकी प्राणप्रतिष्ठा की है अतः अपने मनमें श्रध्धाभाव धारण करते हुए एकाग्र चित्तसे मूर्तिका दर्शन करेंगे तबही सारे जिवमात्रका कल्याण होगा।

•

प्रार्थना

– लाभुबहन मनुभाई पटेल (कुंडाल – ता. कडी)

प्रार्थना हमारे हृदय की एक पुकार है जीस के द्वारा हम अपनी भावनाओ को ईश्वर तक पहुंचाते हैं। जब मनुष्य कीसी मुश्केली में फंसा होता है तब उसके अंतर से प्रार्थना स्वयं ही नीकल आती है। और उसकी वह प्रार्थना में उसका दर्द दूर करने की बिनती होती है। ऐसा नहीं है की दुःख होने पर ही प्रार्थना की जाये। हम आत्म कल्याण और लोक कल्याण के लीये कभी भी प्रार्थना कर सकते हैं। लेकिन हमारी प्रार्थना हृदय से इतनी सच्ची होनी चाहीये की वह भगवान तक पहुंच जाये।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधीजी अपने जीवन में प्रार्थना को एकदम जरुरी मानते थे। वे प्रतिदिन प्रार्थना करते थे और उपवास भी करते थे उनका यह कहना था की उपवास करने से शरीर और मन की शुद्धि होती है और प्रार्थना में एकाग्रता बढती है और उपवास के समय जो प्रार्थना की जाती है वह ईश्वर तक जरुर पहुंचती है।

श्रीकृष्ण के परम भक्त मीराबाई के जीवनका स्त्रोत प्रार्थना ही थी जो अपने पद के माध्यम से अपने हृदय की पुकार नीरंतर भगवान के पास भेजते थे। भक्त मीरा महेल में रहती थी फिर भी उनका जीवन मुश्केलीओं से भरा पड़ा था। उनके नीजी जीवन में कोई सुख नहीं था और एक एक करके उनके स्वजन उनसे दूर होते गये। जो स्वजन बाकी रहे वे भी स्वजन नही रहे लेकीन उनके शत्रु बन गये जो भक्त मीरा को अपमानीत करने की या तो उनकी जान लेने की साजीस करते थे। अब एसे कठीन समय में भक्त मीरा अपनी करुण कथनी कीसको सुनाये जो उनकी यह पीडा सुनकर कम कर सके ? ऐसे कठीन समय पर भक्त मीरा केवल भगवान को ही निरंतर पुकारती थी। और भगवान भी हमेशा उनकी यह पुकार सुनते थे।

विश्व के सभी धर्मो में अगर कोई समानता है तो वह है प्रार्थना। सभी धर्मो में कीसीना कीसी रुप में भगवान को प्रार्थना की जाती है। प्रार्थना के चमत्कारीक नतीजा हम सब जानते है लेकीन कभी कभी ऐसा देखने को मीलता है की प्रार्थना करने से तुरंत कोई लाभ नहीं होता। सारे उपचार भी व्यर्थ हो जाते है और मनुष्य निराश हो जाता है। लेकीन इसका अर्थ यह नहीं है की भगवान को की गई प्रार्थना व्यर्थ हो गई। प्रार्थना कभी भी व्यर्थ नही होती क्योंकी उसके माध्यम से मनुष्य जीवन की नकारात्मक परिस्थितियों में भी सकारात्मकता के साथ जुडता है।

अंधकार से घीरा हुआ व्यक्ति प्रकाश की ओर देखने का प्रयत्न करता है। एसा करने से उसके जीवन में आशा का दीपक जलता रहता है ओर उसको हिंमत मिलती है।

भगवान अच्छे लोगो की बात सुनते हैं और बुरे लोगो की नहि सुनते है एसा नहीं है। भगवान अच्छे और बुरे लोगो के बीच कोई अंतर नहीं रखते। इसीलीये 'रामचरित मानस' में लीखा है की भगवान को केवल निष्कपट और सरल हृदय के व्यक्ति ही प्रिय है और उनके हृदय में भगवान निरंतर निवास करते हैं।

सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुरमां शरदोत्सव

परम कृपालु श्री नरनारायणदेवकी असीम कृपा से एवं प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञासे एवं कालुपुर मंदिर के स.गु. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजीके सुंदर मार्गदर्शन से आसो सुद-१५, शरद पूर्णिमाके शुभदिन पर मंदिरके विशाल परिसरमें परंपरागत रुपसे शरदोत्सव मनाया गया। श्री नरनारायणदेव युवक मंडलने शरदोत्सव के किर्तन के पद सुंदर रागमें प्रस्तुत किये. श्वेत वस्त्रो से तैयार किये गये सुंदर मंडपमें बिराजमान श्रीहरि सबको दिव्य दर्शन दे रहे थे। पूर्णाहुतिकी आरती के बाद सभी भक्तो को दुधपौंआका प्रसाद दिया गया। (शा.नारायणमूनि स्वामी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुरमें दिपावली उत्सव

अहमदाबाद कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिरमें परम कृपालु श्री नरनारायणदेव के परम पवित्र सानिध्यमें एवं प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी शुभ आज्ञासे एवं समग्र धर्मकुलकी खुशी एवं स.गु.महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजीके मार्गदर्शन से दिपावली के उत्सव बडे उत्साह से मनाये गये।

काली चौदश : श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुरमें धर्मकुल के कुलदेवता श्री हनुमानजी महाराजका पूजन अर्चन एवं अन्नकूट आरती प.पू.लालजी महाराजश्रीके वरद् हस्तसे संपन्न हुऐ। पूजारी पार्षद बाबुभगत एवं महादेव भगतने श्री हनुमानजी दादाको अति सुंदर वाघा एवं शणगार किये थे।जिसके दिव्य दर्शन बहोतसारे हरिभक्तोने किये।

दिपोत्सवी समूह शारदापूजन-चोपडा पूजन : परम कृपालु श्री नरानारायणदेव के परम शान्निध्य में प्रसादीके अलौकिक सभामंडपमें दिपावली के शुभदिन पर परंपरागत रुपसे समूह शारदा पूजन एवं चोपडा पूजन प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के वरद हस्त से शामको ६.३० से ८.०० बजे तक शास्त्रोक्त विधि से संपन्न हुआ। जिसमें करिब ७०० जितने व्यापारी हरिभक्तोने अपने व्यापारके चोपडा पूजनका लाभ प्राप्त किया।

नूतन वर्ष छप्पनभोग अन्नकूटोत्सव : प्रातः ५.०० बजे प.पू.मोटा महाराजश्रीने श्री नरनारायणदेवकी मंगला आरती के दिव्य दर्शन करनेके बाद सभी हरिभक्तोको दर्शन एवं आशीर्वाद देनेके बाद श्री स्वामिनारायण म्युझियममें आये उसके बाद सुबह ६.३० बजे शृंगार आरती हुइ और दोपहर १२.०० बजे छप्पनभोग अन्नकूट आरती प.पू.लालजी महाराजके वरद हस्तसे संपन्न हुइ। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री एवं प.पू. लालजी महाराजश्रीने अपनी बैठकमें सभी हरिभक्तो को दर्शन एवं आशीर्वाद दिये। शामके ५.०० बजे तक अहमदावाद शहरके बहुत सारे भक्तजनोने श्री नरनारायणदेवका दिव्य दर्शन करते हुऐ अपने नूतन वर्षको मंगलमय बनाया।

सारे दिपोत्सवके दौरान चोपडा पूजन-अन्नकूटका प्रसाद अहमदावादके नजदिकी करीब ५०० जितने गांवोमें पहुंचानेकी संपूर्ण सेवा ब्रह्मचारी स्वामी राजेश्वरानंदजी, भंडारी जे.पी.स्वामी, को.जे.के.स्वामी, योगी स्वामी, नटु स्वामी, हरिप्रिय स्वामी, भक्ति स्वामी और शा.नारायणमुनी दासजी इत्यादी संत, पार्षद एवं बापुनगर इत्यादी के हरिभक्तने की थी। (शा.नारायण मुनि स्वामी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर प्रयाग (यु.पी.) के द्वारा नूतन मंदिर निर्भय पट्टीमें कथा पारायण

सर्वोपरी श्री स्वामिनारायण भगवानकी कृपा से एवं श्री नरनारायणदेव पिठाधिपती प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञासे एवं सारे धर्मकुलकी खुसी से एवं हमारे प्रयाग मंदिर के पू.महंत सदगुरु स्वामी नारायण स्वरूपदासजी की प्रेरणासे एवं कोठारी पार्षद श्री कमलेश भगतके मार्गदर्शन से प्रयाग से १७ कि.मी. की दुरी पर स्थित निर्भय पट्टी गांव (चांदपूर) (प्रतापगढ) में निर्माण हो रहे श्री स्वामिनारायण मंदिरके स्थान पर दि.३-१०-२०१७ से ९-१०-२०१७ तक श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण हिन्दी भाषामें संपन्न हुइ। जिसके वक्ता सदगुरु शा.स्वामी भक्तिकिशोर दासजी (वडताल) थे।प.भक्त गणपति शुक्ल परिवार इस पारायण के यजमान थे।

इस अवसर पर पोथीयात्रा एवं कथाके दौरान सभी उत्सव बडी खुसी से मनाये गये।

कथाके वक्ताश्रीने मुल संप्रदाय, श्री नरनारायणदेव गादी अहमदाबाद एवं वडताल श्री लक्ष्मीनारायणदेव गादीकी परंपरा एवं धर्मकुलका महात्मय बडे अच्चे तरीकेसे समजाया।

यह अवसर पर प्रयाग मंदिरके पूज्य महंत स्वामी श्री नारायण स्वरुपदासजीने बहोत सारे लोगोंको अपने व्यसनसे मुक्ति दिलाइ और करीब २५०-३०० जितने नये मुमुक्षुको को वर्तमान एवं कंठी पहनाकर श्री नरनारायणदेव गादीके आश्रीत बनाये। सभाका संचालन बडे सुंदर तरीकेसे शास्त्री मुक्तप्रकाशदासजीने कीया और स्वामी लक्ष्मीनारायणदासजीने ठाकोरजी के थालकी सुंदर सेवा अर्पण की और संत मंडलमें नंद संतोके किर्तनके पद बडे सुंदर रागसे प्रस्तुत कीये थे। यजमान परिवार एवं उनके निकटतम स्नेहीजन और बहोत सारे धर्मप्रेमी लोगोने इस कथाका अलौकिक लाभ लिया और अपने जीवनको धन्य बनाया। पू.महंत स्वामीने यजमान परिवारका सन्मान करते हुऐ संप्रदायकी परंपरा सभीको समजाइ। कथाका लाभ ले रहे सभी भक्तोको प्रसाद रुपमें भोजन दिया जाता था। पू.महंत स्वामीके विशेष प्रयासके कारण भगवानश्री स्वामिनाराणका नाम इस स्थान पर गुंजने लगा है।

(साधु रामानुजदास-प्रयाग मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर अंजलीमें सत्संग सभा

परम कृपालु सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवानकी परमकृपासे एवं प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञासे हमारे श्री स्वामिनारायण मंदिर अंजलीके द्वारा प्रतिमास सुंदर सत्संग सभाका आयोजन होता है। इसी कडी में दि.१७-९-२०१७, रविवारके दिन शामको प.पू.लालजी महाराजश्रीकी शुभ निश्रामें सत्संग सभा संपन्न हुइ। जिसमें यजमान परिवारने प.पू. लालजी महाराजश्रीका पूजन-अर्चन एवं आरती का लाभ लिया। अंतमें प.पू. लालजी महाराजश्रीने समस्त सभाको आशीर्वाद दिये और भक्तजनोंको प्रसाद भी दिया गया।

अंजली मंदिरमें महिला सत्संग सभा : परमकृपालु श्री नरनारायणदेवकी कृपासे एवं प.पू. अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुप गादीवालाश्रीकी आज्ञासे प्रतिमास श्री स्वामिनारायणमंदिर (महिला) अंजलीमें सत्संगसभा का आयोजन किया जाता है। जिसमें कालुपुर मंदिरसे सांख्ययोगी महिला भक्त कथावार्ता एवं धून-किर्तन प्रस्तुत करते है।

दि.२१-९-२०१७ गुरुवारके दिन प.पू. अ.सौ. गादीवालाश्री इस सभामें पधारेथे और कथा श्रवणके बाद महिला सत्संगीओको आशीर्वाद देते हुए उन सभीको इस सत्संगसभाका नियमित रुपसे लाभ लेनेकी आज्ञाभीकी थी। महिला भक्तजनोंने प.पू. गादीवालाश्रीका पूजन-अर्चन एवं आरती अर्पणकी और प्रसादभी लिया।

(कोठारी श्री अंजली मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर बोपलमें बालसभा एवं शरदोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेवकी कृपासे एवं प.पू. लालजी महाराजश्रीकी प्रेरणासे हमारे श्री स्वामिनारायण मंदिर बोपलमें प्रति इतवारके दिन बालमंडल एवं बालीकामंडलकी सुंदर बालसभा का आयोजन होता है। मंदिरके कोठारी अमृतभाइ पटेलने कालुपुर मंदिरकी ओर से सभी बच्चोंको बाल सत्संगकी पुस्तिका, पेन, पेन्सिल, बेग इत्यादी देकर उनको प्रोत्याहीत कीया था।

प.पू. आचार्य महाराजश्रीके ४५वें जन्मोत्सव (विजयादशमी)के दिन बहोतही सुंदर रास-गरबा आयोजित कीया था और सभीने प्रसादभी लिया था। शरदोत्सवभी बडे उत्साहसे मनाया गया था। जिसमें महिला हरिभक्तोने बडे सुंदर रागमें गरबा प्रस्तुत किये थे और उन सभीको श्रीहरिका स्वरुप भेटमें दिया गया था और दूध पौंआका प्रसादभी दिया गया था।

(प्रवीण उपाध्याय, बोपल मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर पेथापुरमें प.पू. आचार्य महाराजश्रीका ४५ वां जन्मोत्सव

परमकृपालु परमात्मा सर्वोपरी श्रीहरिकी कृपासे एवं प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञासे श्राध्धपक्षमें हमारे पेथापुर मंदिरमें प.भ. कनुभाइ अंबालाल पटेलकी ओरसे सुंदर कथाका आयोजन किया गया था जिसके वक्ता महंत स्वामी धर्मप्रवर्तकदास थे। बहोत सारे हरिभक्तोने इस कथा श्रवणका लाभ उठाया था। इस अवसर आयोजित सभाका संचालन शास्त्री स्वामी परोपकारदासजीने किया था।

विजयादसमी के पावनदिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीका ४५वां जन्मोत्सव सभी संत एवं हरिभक्तोने बडे उत्साहसे मनाया था। मंगला आरतीके बाद सुबह ६.०० बजे से शामके ६.०० बजे तक सभी हरिभक्तोने अखंड श्री स्वामिनारायण महामंत्र धून की थी। इस धूनके बाद सदगुरु

घनश्यामजीवन स्वामीने सभी हरिभक्तोको धर्मकुलकी आज्ञामें रहकर सत्संगकी प्रवृत्ति करना एवं शिक्षापत्रीके अनुसार जीवन जीनेका सुंदर उपदेश दिया था । महंत स्वामीने हरिभक्तोके द्वारा बनाइ गइ जन्मदिनकी केक को काट कर जन्मोत्सव मनाया था और इस अवसर पर सभी हरिभक्तोको प्रसाद-भोजन दिया गया था । बालवा गांवके श्री नरनारायणदेव युवक मंडलने अति सुंदर रास-गरबाकी प्रस्तुतिकी थी और अंतमें ठाकोरजीकी आरती की गइ थी ।

इस सारे अवसर पर हरिभक्त डो. परेश गज्जर, मितेशभाइ, कनुभाइ पटेल, समीरभाइ, गोपीभाइ, कोठारी मुकुंदभाइ, दीनुभाइ, अतुलभाइ इत्यादीने प्रेरणादायक सेवाकीथी । इस अवसर पर बावला एवं वणजरसे संतभी पधारेथे । (कोठारी मुकुंदभाइ)

इलोल (हिंमतनगर देश) में सत्संग सभा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेवकी कृपासे एवं प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञासे एवं महंत स्वामी प्रेमप्रकाशदास (हिंमतनगर)की प्रेरणा से यहां पर इलोलकी महिला हरिभक्तोके मंडल के द्वारा पूरे श्रावणमासमें धून-भजन किये गये थे और इस अवसर पर दि.२१-८-२०१७ के दिन सत्संग सभाका आयोजन किया गया था जिसमें महिला हरिभक्तोने सुंदर कथा-वार्ता की थी । हरिभक्तोकी सभामें महंत स्वामीने सर्वोपरी श्रीहरिका महात्म्य समजाया था । यह सारा आयोजन किरिटभाइ कोठारी एवं महिला मंडलके द्वारा किया गया था । (जय पटेल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर हिंमतनगरमें अखंड महामंत्र धून

सर्वोपरी श्रीहरिकी कृपासे एवं प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञासे एवं मंदिरके महंत स्वामी प्रेमप्रकाशदासजीकी प्रेरणासे दि.२०-८-२०१७ इतवारके दिन १२.०० घंटेकी अखंड महामंत्र धून सुबहके ७.०० बजे से शामके ७.०० बजे तक सभी हरिभक्तोने कि थी । इस अवसर पर जिल्ला भाजप प्रमुख जे.डी. पटेल, नगर पालिका प्रमुख निलाबेन के. पटेल भी उपस्थित थे । इसका समग्र आयोजन हिंमतनगरके हमारे मंदिरके द्वारा किया गया था । प.भ. नायब मामलतदार जसुभाइ एस. पटेलने प्रेरणा दायक सेवाकी थी । (कोठारी हिंमतनगर मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर उमेदगढ (इडरदेश)

प.कृपालु श्रीजी महाराजकी कृपासे एवं प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञासे एवं अक्षरनिवासी स.गु.धर्मकिशोर स्वामी एवं अक्षरनिवासी स.गु. स्वामी कृष्णकेशवदासजीकी दिव्य प्रेरणासे एवं जेतलपुर मंदिरके सदगुरु महंत शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी एवं स.गु. शास्त्री पी.पी.स्वामीके मार्गदर्शन से भगवान श्रीहरिके परम पवित्र चरणोंसे पावन हुऐ ऐसे हमारे वसइ (डाभला) के श्री स्वामिनारायण मंदिर (हवेलीघाट) में विराजमान श्रीहरिके प्रत्यक्ष स्वरुपके सो वर्ष पूर्ण हुऐ इस अवसर पर भव्य शताब्दि महोत्सव बडे उत्साह से मनाया गया ।

इस अवसर पर १०० घंटेकी अखंड धून, विजय स्थंभ स्थापन, भव्य नगरयात्रा, समूह महापूजा, महाविष्णुयाग, छप्पनभोग अन्नकूट, प्रसादीकी तांबा कूंडीकी पूजा, श्रीमद भागवत पंचाह्न पारायण, भव्य पोथीयात्रा, श्री कृष्ण जन्मोत्सव, रुक्ष्मणी विवाह, राष्ट्रीय सांस्कृतिक कार्यक्रम, श्री धर्मकुल पूजन, संतोका पूजन, सांख्योगी महिला हरिभक्तोका पूजन आदी बडे उत्साहसे मनाये गये ।

दि.६-१०-२०१७से दि.१०-१०-२०१७ तक श्रीमद भागवत पंचाह्न पारायणका सुंदर आयोजन किया गया था । जिसके वक्ता स.गु.शास्त्री स्वामी भक्तिनंदनदासजी (अंजली मंदिर) थे । दि.७-१-२०१७ के दिन प.पू. लालजी महाराजश्री वसइ-डाभला गांवमें पहेलीबार पधारे थे और सभामें विराजमान होकर सभी को आशीर्वाद दिये । श्री नरनारायणदेव युवक मंडल और गांवके सभी युवा हरिभक्तोने धर्मकुल पूजनका अलौकिक लाभ उठाया था ।

दि.९-१०-२०१७ के दिन सभी महिला हरिभक्तोके गुरु प.पू. अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुप गादीवालाश्री पधारे थे और यजमान परिवारकी महिला हरिभक्तोने पूजन, अर्चन और आशीर्वादका लाभ उठाया था ।

दि. १०-१०-२०१७ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीके आगमनसे पहले ठाकोरजीका षोडशोपचार अभीषेक संतोके द्वारा किया गया था । उसके बाद प.पू. महाराजश्रीने अन्नकूट आरती और यज्ञ और कथा की पूर्णाहुतिकी आरती उतारी थी ।

यजमान के परिवारके द्वारा धर्मकुलका पूजन-अर्चन और आरती विधिवतरुपसे हुआ था । प.पू. महाराजश्रीके वरद हस्तोंसे छोटी मोटी सेवा करने वाले यजमानोंका सन्मान हुआ था । युवा हरिभक्तोने इस अवसर पर प.पू.महाराजश्रीको १०० फीटका हार पहनायां था । अंतमें प.पू. आचार्य महाराजश्रीने इस अवसर पर सेवा करने वाले सभी संत एवं हरिभक्तजनोंको आशीर्वाद दिये थे । इस

अवसर पर अहमदावाद, जेतलपुर, महेसाणा, अंजली, जयपुर, नारणपुरा, लालुडा, वडनगर, सिध्धपुर, हिंमतनगर, सापावाडा, मकनसर, बापुनगर, वाली, माणसा, पेथापुर, भात, धरियावद और उनावा इत्यादि स्थानसे संत-महंत पधारे थे एवं और कइ स्थानसे सांख्ययोगी महिला हरिभक्त भी पधारे थे । इस अवसर पर गांवके सभी छोटे-बडे हरिभक्तोने अपने तन-मन-धनसे सेवा की थी । अंतमें उत्सवके आखीर दिन पर सभी हरिभक्तो के लीए सुंदर प्रसादकी व्यवस्था की गइ थी। (वसइ डाभला समस्त सत्संग समाज)

बामरोली (म.प्र.) श्री स्वामिनारायण मंदिरमें श्रीमद भागवत सप्ताह

परमकृपालु श्री स्वामिनारायण भगवानकी कृपासे एवं प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञासे एवं मंदिरके महंत स्वामी लक्ष्मीनारायणदासजीकी प्रेरणासे हमारे आदि आचार्य प.पू.श्री अयोध्याप्रसादजी महाराजके प्रिय एसे प्रसादिके गाँव बामरोली के हमारे श्री स्वामिनारायण मंदिरमें श्रीमद भागवत सप्ताह पारायणका हिंदी भाषामें आयोजन किया गया था । जिसके वक्ता स.गु.शा.स्वा. हरिजीवनदासजी थे । सप्ताह के आखिर दिन जो भंडारा हुआ उसका लाभ साधुसंत एवं करिब ५००० भाविकोने प्रसादका लाभ लिया और कथा-श्रवणभी किया। (समस्त बामरोली गांव)

लींभोइ कंपामें भागवत कथा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेवकी कृपासे एवं प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञासे, मोडासा तहसिलके लींभोइ कंपा गांवमें ग्यारह दिनात्मक भागवत सप्ताह पारायणका आयोजन किया गया था । जिसके वक्ता शा.स्वा. हरिजीवनदासजी थे । इस कथा-श्रवणका लाभ बडी संख्यामें कच्छी हरि भक्तोने लिया था । (भरतभाइ ए. पटेल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर, कुंदल (कडी)में सत्संग प्रवृत्ति

परमकृपालु श्री नरनारायणदेवकी कृपासे एवं समग्र धर्मकुलके आशीर्वादसे श्री स्वामिनारायण मंदिर (महिला) कुंडलमें इंन्दिरा एकादशीके पावन दिन पर सभी महिला हरिभक्तोने मिलकर बारह घंटोकी श्री स्वामिनारायण महामंत्र अखंड धून की थी । उसके बाद समूह आरती भी की गइ थी । सभी महिला हरिभक्तोने इस धून एवं किर्तन भक्तिका लाभ लिया था । महिला मंडलने बडी सुंदर सेवाकी थी । अंतमें जनमंगल पाठ, संध्या आरती, थाल एवं नित्यनियम और प्रसादका लाभ सभी महिला हरिभक्तोने उठाया था। (लाभुबेन एम. पटेल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर (संतरामपुर)

परम कृपालु श्रीजी महाराजकी कृपा से एवं प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञा से एवं सदगुरु स्वामी सूर्यप्रकाशदासजीकी प्रेरणासे खेरवा गांवके नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिरमें ठाकोरजी की प्राण प्रतिष्ठाविधि प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीके वरद हस्तोंसे संपन्न हुइ । इस अवसर पर त्रिदिनात्मक श्री हरि याग संपन्न हुआ और श्रीमद भागवत पंचाह्न कथाका भी आयोजन हुआ जिसमें शा.स्वा. विश्वस्वरुपदासजी वक्ता थे । इस अवसरका लाभ बहोत सारे भक्तोने उठाया था और प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने सभी हरिभक्तोको आशीर्वाद दिऐ । अनेक स्थानसे पूज्य संतभी पधारे थे । उत्सव पूर्ण होते ही शा.स्वा. विश्वस्वरुपदासजी और हरिभक्तोने खेरवासे संतरामपुरमें स्थित श्री हनुमानजी दादा के मंदिर तक पदयात्रा करते हुऐ दिव्य दर्शन किये थे।

(कुलदिप पटेल, श्री नरनारायणदेव युवक मंडल)

रणेला से संतरामपुरसे हनुमानजी महाराज के मंदिर तक पदयात्रा एवं जन्माष्टमी उत्सव

प.कुपालु श्री नरनारायणदेवकी कृपासे एवं प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञा से रणेला गांवके नुतन मंदिरमें मूर्तिकी प्राण प्रतिष्ठाविधि बडे उत्साहके साथ संपन्न हुए । इसी लिए शा.स्वा. विश्वस्वरुपदासजी और स्वामी पुरुषोत्तमप्रियदासजी (वडताल)ने हरिभक्तोके साथ रणेला गांवसे संतरामपुर में स्थित श्री हनुमानजी महाराजके मंदिर तक पदयात्रा करके दिव्य दर्शन किए थे ।

शा.स्वा. विश्वस्वरुपदासजी के मार्गदर्शनसे यहां पर जन्माष्टमी उत्सव बडे उत्साहसे मनाया गया । रास-गरबा, कथा-वार्ता के बाद जन्मोत्सवकी आरती भी की गई थी और इस अवसर पर श्री नरनारायणदेव युवक मंडलने सुंदर सेवा की थी। (कोठारी-रमेशभाइ पटेल)

सर्वोपरीधाम छपैयापुरमें जन्मस्थान महोत्सवके निमित विजय स्थंभ यात्रा

सर्वोपरि इष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवानकी पूर्ण कृपा से एवं प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञा से एवं समग्र धर्मकुलकी खुसी से और इस स्थानके महंत सदगुरु ब्रह्मचारी स्वामी वासुदेवानंदजीकी प्रेरणासे सर्वोपरीधाम छपैयामें श्री घनश्याम महाराज जन्मस्थान महामहोत्सव के

निमित्त दि.४-९-२०१७ के दिन विजय स्थंभ स्थापना उत्सव बडे उत्साहसे मनाया गया ।

सबसे पहले सर्वोपरि श्री घनश्याम महाराजके सानिध्यमें विजय स्थंभ एवं ध्वजा का विधिवतरुपसे पूजन करके धर्मारण्य क्षेत्र तक विजय स्थंभ यात्रा बडे उत्साह से आयोजित की गइ थी ।

इस अवसर पर पू.शा.पी.पी. स्वामी (जेतलपुर) और अहमदाबाद एवं अयोध्यासे रामानुज साधु, संन्यासीओने सर्वोपरी श्री घनश्याम महाराजके अलौकिक लिला चरित्रको याद करते हुए अपने वक्तव्य दिये थे । अंतमें विजय स्तंभका विधितरुपसे श्री घनश्याम महाराजके जयघोष के साथ पूजन करके स्थापन किया गया था । इस अवसर पर आयोजित सभा का संचालन शा.विश्वस्वरुपदासजीने किया था और इस अवसर पर करिब ३५०० हरिभक्त उपस्थित थे ।

(पुजारी ब्रह्मचारी स्वामी हरिस्वरुपानंद)

श्री स्वामिनारायण मंदिर जानवड (संतरामपुर)

परम कृपालु श्री स्वामिनारायण भगवानकी कृपासे एवं प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर जानवडमें जलजीलणी एकादशी के पर्व पर शा.विश्वस्वरुपस्वामीने कथामृत किया था जिसमें श्री नरनारायणदेव के प्रति निष्ठाकी सुंदर बात रखी थी । युवक मंडलके द्वारा सबके लिए फलाहारकी व्यवस्था की गइ थी ।

इस अवसर पर ठाकोरजी को नदीमें जलाभीषेक किया गया था और अंतमें ठाकोरजी की आरती की गइ थी ।

(रतिभाइ पटेल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर हर्षद कोलोनी (बापुनगर) में धुन सत्संग सभा

परम कृपालु श्री नरनारायणदेवकी कृपासे एवं प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञा से एवं समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से और दासभाइकी प्रेरणा से दि.२०-९-२०१७ के दिन दोपहर ३ से ७ बजे तक पुजारी मोहनबापाकी स्मृतिमें श्री स्वामिनारायण महामंत्र धुनका आयोजन किया गया था । इस अवसर पर कालुपुर मंदिरके सदगुरु महंत शा.स्वा. हरिप्रसाददासजी, सदगुरु शा.स्वा. निर्गुणदासजी, शा.रामस्वामी (कोटेश्वर), शा. दिव्यप्रकाश स्वामी और हरेकृष्ण स्वामी (एप्रोच) आदि संतोने भगवानके लिला चरित्रोकी बात रखी थी । इस अवसर पर श्री नरनारायणदेव युवक मंडल एवं महिला हरिभक्तोने प्रेरणादायक सेवा की थी । (गोरधनभाइ सितापरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर माणेकपुर (चौधरी)

सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवानकी कृपासे एवं प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञा से गणेश चतुर्थी के पावन दिन पर श्री स्वामिनारायण मंदिर माणेकपुर (चौधरी) में सभी हरिभक्तोने साथ मिलकर धुन-भजन-किर्तन किये थे और अन्नकूट का भी आयोजन किया गया था । जिसके यजमान हरिभक्त दिव्य एवं चौधरी जयंतीभाइ नरसंगभाइ थे ।

भादरवा वद-८ के दिन अक्षर निवासी सदगुरु स्वामी करसनदासजी (जाडीवाडा)की पूर्णतिथि के अवसर पर यहां पर १२ घंटे की महामंत्र धून एवं अन्नकूटका आयोजन किया गया था जिसके यजमान हरिभक्त चौधरी जोइतीबेन बबाभाइ परिवार थे । इस अवसर पर सदगुरु महंत शा.स्वा. पी.पी. स्वामी (गांधीनगर) अपने संत मंडल के साथ पधारे थे और सभामें सभी युवानोंको व्यसनसे दुर रहनेका आहवान कीया था । (चौधरी डाह्याभाइ शंभुभाइ-माणेकपुर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर डांगरवा (वांटो)

सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवानकी कृपासे एवं प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञा से एवं प.पू.लालजी महाराजश्री के आशीर्वादसे श्री हरि के अलौकिक चरणांरविंद से अंकित श्री स्वामिनारायण मंदिर डांगरवा (वांटो) में दि.२४-९-२०१७ इतवारके दिन बालमंडल के ६० बच्चोनें मुक्तराज जतनमा के घर, गंगा जडियो कुवा, प्रसादिकी छत्री इत्यादि प्रसादीके स्थान के दिव्य दर्शन किये । इस अवसर पर सभा आयोजित की गइ थी जिसमें सभी बच्चोको प्रसाद दिया गया था ।

(डाभी अनंतसिंह लक्ष्मणसिंह)

धरमपुर (खाखरिया) गांवमें प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीका ४५वां जन्मोत्सव

प.कृपालु श्री नरनारायणदेवकी कृपासे एवं प.पू.लालजी महाराजश्रीकी प्रेरणासे श्री स्वामिनारायण मंदिर धरमपुर (खाखरिया)में आसो सुद-१०, दि.३०-९-२०१७ विजयादसमी के पावन अवसर पर सभी हरिभक्तोने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी प्रतिमाका पूजन अर्चन एवं धुन-किर्तन के साथ ४५वे जन्मोत्सवको बडे उत्साहसे मनाया था । अंतमें सभीने प्रसाद लिया था । (सत्संग समाजकी ओर से कोठारी श्री धरमपुर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर-बिलोदरा (माणसा)का तृतिय पाटोत्सव

परम कृपालु श्री नरनारायणदेवकी कृपासे एवं प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञा से एवं समग्र धर्मकुलकी खुशी से और सदगुरु महंत शा.स्वा. पी.पी.स्वामी (गांधीनगर)की प्रेरणासे श्री स्वामिनारायण मंदिर बिलोदरा (माणसा)का तृतीय पाटोत्सव विधिवत रुपसे मनाया गया । इस अवसर पर श्रीमद सत्संगी जीवन रात्री पारायण, श्रीहरियाग, तुलसी विवाह और शाकोत्सव इत्यादी आयोजित किये गये थे ।शा.स्वा. कुंजविहारीदासजी (बाल स्वरुप श्री घनश्याम महाराजके पुजारी) ने कथामृतका पान कराया था । इस अवसर पर कालुपुर मंदिरके सदगुरु महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी, पूज्य ब्रह्मचारी स्वामी राजेश्वरानंदजी, इडरके महंत स्वामी सिध्धेश्वरदासजी, प्रांतिजके महंत स्वामी प्राणजीवन दासजी, वडनगरके शा.स्वामी विश्वप्रकाशदासजी इत्यादि संत मंडल और गांधीनगर एवं नारणघाटसे संतभी पधारे थे। गांवके सभी हरिभक्त इस अवसर के यजमान थे ।

(कोठारीश्री और समस्त सत्संग बिलोदरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मुबारकपुरका सांतवा वार्षिक पाटोत्सव

परम कृपालु श्री नरनारायणदेवकी कृपासे एवं प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञा से एवं समग्र धर्मकुलकी खुशी से और सदगुरु महंत शा.स्वा. पी.पी.स्वामी (गांधीनगर)की प्रेरणासे श्री स्वामिनारायण मंदिर मुबारकपुरका सांतवा पाटोत्सव बडे उत्साहसे मनाया गया।

इस अवसर पर पू.महंत शास्त्री पी.पी.स्वामी (गांधीनगर) और अन्य सभी संतोने श्रीहरिका सर्वोपरी महात्म्य समजाया था । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीके वरद हस्तसे निजमंदिरमें बिराजमान ठाकोरजी की अन्नकूट आरती और भव्य शाकोत्सव मनाया गया था और अंतमें सभी संत हरिभक्तोको आशीर्वाद मिले थे।

अक्षरनिवासी चीमनभाइ विठ्ठलभाइ पटेल परिवार इस पाटोत्सवके यजमान थे।

(समस्त सत्संग समाज मुबारकपुर)

देवुसणा गांवमें सत्संग सभा

परम कृपालु श्री नरनारायणदेवकी कृपासे एवं प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञा से एवं समग्र धर्मकुलके आशीर्वादसे देवुसणा गांवमें परम भक्त रमणलाल अमिचंददास पटेल और कांताबेन रमणलाल पटेल (अमेरिका)का जिवन पर्व उनके परिवार द्वारा मनाया गया । इस अवसर पर दि.२२-१०-२०१७के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री दर्शन और आशीर्वाद देनेके लिए पधारे थे । इस अवसर पर महंत सदगुरु शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी (कालुपुर), पूज्य ब्रह्मचारी स्वामी राजेश्वरानंदजी, सदगुरु स्वामी हरिप्रसाददासजी, चैतन्य स्वामी, पुराणी स्वामी लक्ष्मीनारायणदासजी(श्री वल्लभ आश्रम-किल्ला पारडी, वलसाड), शा.स्वा. रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर), शास्त्री दिव्यप्रकाश स्वामी (नारायणघाट) आदी संतगण पधारे थे और आशीर्वाद दिये थे । सदगुरु शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजीने श्री नरनारायणदेवका महिमा कथाके स्वरुपमें प्रस्तुत किया था । सदगुरु महंत शास्त्री पी.पी.स्वामी (गांधीनगर) इस सारे अवसरके मार्गदर्शक रहे थे ।

(शा.स्वा. चैतन्य स्वरुपदासजी-गांधीनगर)

मूली प्रदेशके सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर कांतीपुर (मोरबी)

सर्वावतारी श्री स्वामिनारायण भगवानकी कृपासे एवं श्री नरनारायणदेव पिठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञा से एवं धर्मकुलके आशीर्वादसे, कांतीपुर गांवमें श्री स्वामिनारायण मंदिर सरदारबाग मोरबीके द्वारा जलजिलणी उत्सव बडे उत्साहसे संत और हरिभक्तोने मनाया था । इस अवसर पर मोरबीके मंदिरके संत विश्वविहारीदास, मूली मंदिरके वृंदावन स्वामी और ब्रह्मस्वरुप स्वामी, जयेश भगत और करीब ७०० हरिभक्तोने साथ मिलकर श्री ठाकोरजीका नौकाविहार और अभिषेक आरती किये थे । इस अवसर पर हरिभक्त इश्वरभाइ कगथरा, अमृतलाल आद्रोजा और माधवजीभाइ आद्रोजाने प्रेरणादायक सेवा की थी। (कोठारी सरदारबाग मोरबी मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर रणजितगढ (ता. हलवद)

परब्रह्म इष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवानकी कृपा से एवं श्री नरनारायणदेव पिठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञा से एवं धर्मकुलके आशीर्वादसे, श्री स्वामिनारायण मंदिर रणजितगढमें भादरवा वद अमास दि.२०-९-२०१७के दिन संत हरिभक्तोकी सत्संगसभाका आयोजन किया गया था । इस अवसर पर मूली मंदिरसे स्वामी भक्तिहरिदासजी उनके शिष्य मंडलके साथ पधारे थे । मोरबी के महंत स्वामी और सुरेन्द्रनगर मंदिरसे सदगुरु वयोवृध्ध महंत स्वामी

प्रेमजीवनदासजी इत्यादी संत और हळवदसे सांख्ययोगी महिला हरिभक्तभी पधारे थे । इस अवसर पर आयोजित सभामें भक्तिहरिस्वामीने सर्वोपरी श्रीहरिकी वनविचरण लीला, संप्रदायकी परंपरा और सत्संग इत्यादिकी सुंदर बाते रखी थी और सभी हरिभक्तोको धर्मकुलकी आज्ञामें रहकर सत्संगकी प्रवृत्ति कैसे करना और नित्यनियम कैसे करना यह समजाया था । अंतमें सभी हरिभक्तोने प्रसाद ग्रहण किया था। (प्रतिनिधि अनिल दुधरेजिया - ध्रांगध्रा)

विदेश सत्संग समाचार

छपैयाधाम (पारसीपेनी अमेरिका) श्री स्वामिनारायण मंदिरमें प.पू. महाराजश्रीका जन्मोत्सव

सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवानकी कृपा से एवं प.पू.मोटा महाराजश्री और प.पू.लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से हमारे छपैयाधाम श्री स्वामिनारायण मंदिर पारसीपेनी (अमेरिका) में दि. १-१०-२०१७ इतवारके दिन शामको ५ से ८ बजे तक मंदिरके महंत शा.स्वा. अभिषेक प्रसाददासजी, स्वामी धर्मवल्लभदासजी और मूली के संतोकी उपस्थिति में श्री नरनारायणदेव पिठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीका ४५वां जन्मोत्सव सभी संत हरिभक्तोने बडे उत्साहके साथ मनाया गया था।

सबसे पहले युवा हरिभक्तोके द्वारा धून-भजन-किर्तन किये गये थे। इस अवसर पर आयोजित सभामें सभी संतोने प.पू. महाराजश्रीकी छवीका पूजन किया था । उसके बाद यजमान परिवार और निमंत्रित अतिथिगणने भी पूजन किया था।

महंत स्वामीने धर्मकुलकी परम्परा और उसका महत्व समजाया था । इस अवसर पर सभी यजमान और सहयजमानो का सन्मान किया गया था । अंतमें सभी हरिभक्तोने जनमंगलपाठ और नित्यनियमके बाद प्रसाद लिया था। (प्रविण शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनिया (अमेरीका) में प.पू. महाराजश्रीका ४५वां जन्मोत्सव

सर्वावतारी इष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवानकी कृपा से एवं प.पू.मोटा महाराजश्री और प.पू.लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से हमारे श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनिया (अमेरिका) में पुजारी पार्षद भरत भगत और हरि भक्तोने विजयादशमीके पावन दिन श्री नरनारायणदेव पिठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का ४५वां जन्मोत्सव बडे उत्साहके साथ मनाया था।

सबसे पहले युवा हरिभक्तोके द्वारा धून-भजन-किर्तन किये गये थे । इस अवसर पर सभी हरिभक्तोने प.पू.महाराजश्रीकी छवीका पूजन किया था । उसके बाद यजमान परिवार और सह यजमानने भी पूजनका लाभ लिया था। श्री भरतभाइने धर्मकुलकी परंपरा और उसका महत्व समजाया था । इस अवसर पर सभी यजमान और सह-यजमानो का सन्मान किया गया था। उसके बाद संध्या आरती-थाल-श्री हनुमानजीकी आरती और श्री हनुमान चालीसा का पाठ सभी हरिभक्तोने साथ मिलकर किया था। (प्रविण शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर ह्युस्टन टेक्सासमें प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीका ४५वां जन्मोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेवकी कृपा से एवं प.पू.मोटा महाराजश्री और प.पू.लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से हमारे श्री स्वामिनारायण मंदिर ह्युस्टन टेक्सासमें दि. ३०-९-२०१७ शनिवारके दिन शामको ५ से ८ बजे तक सभी हरिभक्तोने श्री नरनारायणदेव पिठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का ४५वां जन्मोत्सव बडे उत्साहके साथ मनाया था।

मंदिरके महंत भक्तिस्वामी और निलकंठ स्वामीकी उपस्थितिमें सभी हरिभक्तोने धून-भजन-किर्तन किये थे । इस अवसर पर संतोने प.पू.महाराजश्री की छवीका पूजन किया था। उसके बाद यजमान परिवार और उपस्थित सभी हरिभक्तोनेभी पूजन किया था।

महंत स्वामीने प.पू.आचार्य महाराजश्रीकी देश-विदेश की सत्संग प्रवृत्ति बताते हुए धर्मकुलका महत्व समजाया था। इस अवसर पर प्रेरणा दायक सेवा करने वाले सभी हकिभक्तोना सन्मान किया गया था । अंतमें सभी हरिभक्तोने नित्यनियम-थाल-आरतीके बाद प्रसाद लिया था। (प्रविण शाह)

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।

(१) श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायणदेव युवक मंडल आयोजीत शीबीर को संबोधीत करते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री और संत गण ।(२) अंजली वासणा मंदिर में अन्नकूट दर्शन ।(३) वसई-डाभला मंदिर में शताब्दी महोत्सव के अवसर पर यज्ञ में श्रीफल अर्पीत करते हुए और ठाकुरजी की अन्नकूट आरती उतारते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री ।(४) कालुपुर मंदिर में प.पू. लालजी महाराजश्री के सानिध्य में और सापावाडा मंदिर में शरद पूनम दर्शन

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at
Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/15-17
issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2017

प.पू. आचार्य महाराजश्री रजाईना केनेडा मंदिर के पाटोत्सव अवसर पर ठाकोरजी की आरती उतारते हुए।

सीनेमेन्शन (साउथ जर्सी) यु.एस.ए.

अपने विभीन्न मंदिरो में दिपावली के अन्नकूट के दर्शन

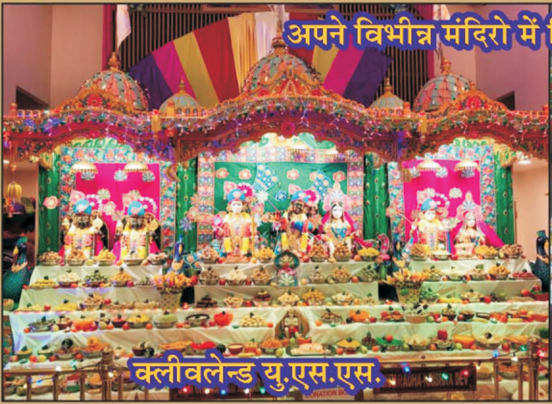
क्लीवलेन्ड यु.एस.एस.

ओकलेन्ड - न्युझीलेन्ड

टोरन्टो - केनेडा

सीडनी - ओस्ट्रेलीया

एटलान्टा - यु.एस.ए.

जीवराजपार्क - अहमदाबाद